रुपये 10

सेवा समर्पण

वर्ष-38, अंक-4, पौष-माघ, विक्रम सम्वत् 2077, जनवरी, 2021

स्वामी जी के सपनों को साकार करती
सेवा भारती

फैंशन डिजाइनिंग से आत्मनिर्भर होती बहनें

– मीनाक्षी मक्कड़

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 15 जुलाई, 2015 को स्किल इण्डिया मुहिम की घोषणा की, जिसमें उन्होंने 2022 तक पूरे भारत में 40 करोड़ लोगों को इस अभियान के तहत कुशल बनाने का प्रण लिया था। इस स्किल इण्डिया कार्यक्रम के तहत पूरे भारत में ऐसे संस्थान स्थापित किये गए जहां पर निःशुल्क या मामूली शुल्क लेकर उनके कौशल को विकसित करने का कार्य शुरू हुआ।

आज हम सेवा भारती के माध्यम से इसी उद्देश्य को प्राप्त करने में अग्रसर हो रहे हैं । सेवा भारती के स्वावलम्बन कार्यक्रम में बहनों को सिलाई सिखाते हुए हमने उनके स्किल में एक नया कौशल जोड़ने के लिए फैशन डिजाइनिंग का प्रकल्प शुरू किया है । फैशन डिजाइनिंग के प्रकल्प के द्वारा हमारी बहनें उत्तम तरीके से नाप लेने में निपुण बन गयी हैं। आज हमारी बहनें बहुत ही उत्तम तरीके से भांति-भांति की कटिंग करना सीखने के साथ-साथ सुन्दर-सुन्दर एवम् अलग तरह के बखिये (टाँके) चला कर व सीख कर उनमें भी उन्होंने दक्षता हासिल कर ली है। अब हमारा अगला कदम, अपनी पूर्णरूप से सिलाई कार्य में निपुण हो चुकी बहनों को मुद्रा-लोन के माध्यम से उनको स्व-रोजगार की ओर प्रेरित करना है।

जो मनुष्य निरंतर अपने स्किल्स में वृद्धि करते जाते हैं, उनके जीवन में भी निरंतर सुख और समृद्धि की वृद्धि होती चली जाती है। प्रत्येक व्यक्ति की समृद्धि के साथ-साथ वह राष्ट्र भी निरंतर समृद्धि की ओर बढ़ता चला जाता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के शब्दों में ''कौशल विकास योजना'' जेब में रुपये भरने जैसा नहीं है, बल्कि गरीबों के जीवन में आत्मविश्वास भरने जैसा है। इस प्रकार लोगों के स्किल्स को विकसित करके उनके जीवन में सकरात्मकता लाई जा सकती है। उनके आत्मविश्वास को जगाया जा सकता है। उन लोगों का खुद का व्यवसाय शुरू करवाने में उनकी मदद कर सकते हैं।

हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के शब्दों में ''मैं भारत को विश्व में कौशल राजधानी बनाने के लिए पूरे राष्ट्र को प्रतिज्ञा करने के लिए आह्वान करता हूँ।''

विशेष उपलब्धि

मेरा नाम योगिता बाली है। मैं केशव विद्या मन्दिर में सिलाई की अध्यापिका हूँ। फैंशन डिजाईनिंग की कक्षा में हमने माप लेना सीखा है। पैटर्न बनाना सीखा है। ड्रेसिंज को ग्रेसफुल बनाने के लिए लायक्रा पेन्टिंग का यूज किया जाता है जो हमने अपने गाउन में लगाई है। पहले हम आर्महॉल का नाप नहीं लेते थे जिससे कपड़े पहनते समय बाजू में झोल आता था या कंधे खिंचते थे, पर अब आर्महॉल का सही नाप लेने से कंधे एक दम ठीक बैठते थे। इस सफलता के पीछे कौशल विकास योजना एवं सेवा भारती का मैं आभारी हूं।

सेवा समर्पण

वर्ष-38, अंक-4 कुल पृष्ठ-36 जनवरी, 2021

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
सम्पादकीय		04
नरेन्द्र ऐसे बने स्वामी विवेकानंद	ऋषिदेव	07
श्रद्धांजलि		09
दान का पर्व है मकर संक्रांति	होलिका कुमारी	10
'द्रविणं' का यह अर्थ है	प्रतिनिधि	12
करें योग, भगाएं रोग	डॉ. सुरक्षित गोस्वामी	13
'बेला' और 'कल्याणी' भारत की दो वीरांगनाएँ	बुधराम हिन्दुस्तानी	18
शाहिद सब्जीवाला	आचार्य मायाराम पतंग	20
जब सीता ने राम-लक्ष्मण को डांट पिलाई	बिपिन किशोर सिन्हा	23
सिंदूर का मर्म समझिए	डॉ. कल्पना दीक्षित	24
संतान के रूप में कौन आता है	अविनाश पारिख	25
भारतीयता का विरोधी है बॉलीवुड	प्रो. धीरज शर्मा	26
चमत्कारी है तनोट माता का मन्दिर	रचना शास्त्री	29
ढाबे में 'नमाज पढ़ने की जगह'	प्रतिनिधि	30
गृहस्थ का धर्म	स्वामी परमानन्द भारती	31
सनातन संस्कृति की रक्षक	जगदंबा मल्ल	32

परामर्शदाता
आचार्य मायाराम पतंग
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

सहसम्पादक
शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर

एक प्रति : 10/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 100/-रुपये

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

स्वामी जी के सपनों को साकार करती सेवा भारती

12 जनवरी, 1863 को कोलकाता में जन्मे स्वामी विवेकानंद जी केवल 39 वर्ष की आयु में इस नश्वर शरीर को छोड़ गए। इस छोटी-सी आयु में उन्होंने इतना बड़ा कार्य कर दिया कि आज भी उनके कार्यों का उदाहरण दिया जाता है। स्वामी जी का दृढ़ विचार था कि हमें अपने अभावग्रस्त परिवारों की सेवा करनी चाहिए। हमारे देश में कितने बेसहारा हैं, कितने दिव्यांग हैं, वंचित हैं जिनको दो समय का भोजन नहीं मिलता है। सभी अभावग्रस्त परिवारों की सेवा हमारा धर्म है, उत्तरदायित्व है। इसको दया-दान न समझा जाए। हमें सनातन धर्म के सिद्धांतों को याद रखना चाहिए, जिसमें कहा गया है कि यदि दायां हाथ देता है तो बाएं हाथ को पता नहीं लगना चाहिए। इसी भावना के कारण सेवा भारती को समाज का सहयोग मिलता है और सेवा भारती स्वामी विवेकानंद जी के विचारों को अपनी थाती मानकर समाज के लिए कार्य कर रही है। आज सेवा भारती की छत्रछाया में हजारों लोग फल-फूल रहे हैं।

स्वामी विवेकानंद जी ने लोगों को त्याग और सेवा के लिए प्रेरित ही नहीं किया, बल्कि रामकृष्ण मिशन के माध्यम से सेवा के अनेक प्रकल्प भी शुरू किए। उनके विचार में नर सेवा ही नारायण सेवा है। इस चिंतन को अपना आदर्श बनाते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कुछ कार्यकर्ताओं ने 'सेवा भारती' की स्थापना की। सेवा, समर्पण और संस्कार के द्वारा समाज को समरस एवं सद्भावना पूर्ण बनाने के दृढ़ निश्चय ने दिल्ली जैसे महानगर की झुग्गी-झोपड़ियों के बीच 1979 में सेवा के विभिन्न कार्यों का शुभारम्भ किया। स्वयं सेवा से प्रेरित हो धीरे-धीरे कार्यकर्ता जुड़ते गये, दानदाता मिलते गये और दिल्ली के विभिन्न अभावग्रस्त स्थानों पर केन्द्र खुलते गये।

स्वामी जी कहते हैं, ''दूसरों के लिए रत्ती भर काम करने से भीतर की शक्ति जाग उठती है। दूसरों के लिए रत्ती भर सोचने से धीरे-धीरे हृदय में सिंह का सा बल आ जाता है।'' इस शक्ति के आधार पर ही वर्तमान में पूरी दिल्ली में हजारों प्रकल्प सेवा भारती के चल रहे हैं, जिनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, संस्कार और सामाजिक सुरक्षा प्रमुख हैं।

''दान से बढ़कर और कोई धर्म नहीं है। सबसे अधम मनुष्य वह है जिसका हाथ सदा खिंचा रहता है और जो अपने लिए ही सब पदार्थों को लेने में लगा रहता है, और सबसे उत्तम पुरुष वह है जिसका हाथ हमेशा खुला रहता है। हाथ इसलिए बनाए गए हैं कि सदा देते रहो।''

-स्वामी विवेकानंद

शास्त्रों में कहा भी गया है कि जो भगवान के दासों की सेवा करता है वही भगवान का सर्वश्रेष्ठ दास है। यह बात सर्वदा ध्यान में रखनी चाहिए... ''निःस्वार्थपरता ही धर्म की कसौटी है। जिसमें जितनी ही अधिक निःस्वार्थपरता है वह उतना ही आध्यात्मिक है तथा उतना ही शिव के समीप।'' स्वामी जी दान के महत्व को बताते हैं, ''दान से बढ़कर और कोई धर्म नहीं है। सबसे अधम मनुष्य वह है जिसका हाथ सदा खिंचा रहता है और जो अपने लिए ही सब पदार्थों को लेने में लगा रहता है, और सबसे उत्तम पुरुष वह है जिसका हाथ हमेशा खुला रहता है। हाथ इसलिए बनाए गए हैं कि सदा देते रहो।''

सेवा भारती का मूल दर्शन स्वामी जी का चिंतन है। स्वामी जी अपने भाषणों में बार-बार कहते हैं, ''कुछ भी न मांगो, बदले में कोई चाह न रखो। तुम्हें जो कुछ

देना हो, दे दो। वह तुम्हारे पास वापस आ जाएगा, लेकिन आज ही उसका विचार मत करो। वह हजार गुना हो वापस आएगा पर तुम अपनी दृष्टि उधर मत रखो।''

42 वर्ष की मेहनत और तपस्या ने सेवा भारती में नई चुनौतियों का साहसपूर्ण सामना करने की क्षमता विकसित कर दी है। बच्चों, युवतियों, युवक तथा महिलाओं के बीच विविध सेवा कार्यों ने अपना सकारात्मक प्रभाव डाला है। स्वामी जी के शब्द सेवा भारती को निरन्तर प्रेरणा देते रहे हैं। स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं, ''क्या तुम अपने भाई-मनुष्य जाति को प्यार करते हो? ईश्वर को कहाँ ढूंढने चले हो- ये सब गरीब, दुखी, दुर्बल मनुष्य क्या ईश्वर नहीं हैं? इन्हीं की पूजा पहले क्यों नहीं करते? गंगा तट पर कुआं खोदने क्यों जाते हो? प्रेम की असाध्य साधिनी शक्ति पर विश्वास करो...''

असंख्य झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले परिवारों और बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ संस्कारित करने का दायित्व सेवा भारती बखूबी निभा रही है। नर्सरी से 5वीं कक्षा तक बाल बालिका संस्कार केन्द्रों के द्वारा यह कार्य सुचारू रूप से हो रहा है। विवेकानन्द जी अपने भाषणों में शिक्षा पर विशेष बल देते थे। उनका कहना था, ''जब तक करोड़ों भूखे और अशिक्षित रहेंगे तब तक मैं प्रत्येक आदमी को विश्वासघातक समझूँगा जो उनके खर्च पर शिक्षित हुआ है, परन्तु जो उन पर तनिक भी ध्यान नहीं देता।''

स्वामी जी के शब्दों में ''अपने भाइयों का नेतृत्व करने का नहीं, वरन् उनकी सेवा करने का प्रयत्न करो। नेता बनने की उस क्रूर उन्मत्तता ने बड़े-बड़े जहाजों को इस जीवन रूपी समुद्र में डुबो दिया है।''

''कुछ भी न मांगो, बदले में कोई चाह न रखो। तुम्हें जो कुछ देना हो, दे दो। वह तुम्हारे पास वापस आ जाएगा, लेकिन आज ही उसका विचार मत करो। वह हजार गुना हो वापस आएगा पर तुम अपनी दृष्टि उधर मत रखो।''

-स्वामी विवेकानंद

इस कार्य के लिए दलबंदी ईर्ष्या और आत्मप्रतिष्ठा को सदा के लिए छोड़कर संगठित होने की आवश्यकता है। एकजुट होकर सेवा के लिए साथ-साथ आगे बढ़ने की जरूरत है। वास्तव में स्वामी जी की भांति मुक्ति या भक्ति की परवाह किये बिना मौन भाव से सेवा करना ही नर सेवा नारायण सेवा है। इसको अपना ध्येय वाक्य मान सेवा भारती, समाज की सहायता से आस्था, एकता, शांति की ओर राष्ट्र की चेतना को जागरूक बना रही है। इसके साथ-साथ चल चिकित्सा के द्वारा जन सामान्य को स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान कर, युवा वर्ग में स्वावलम्बन का भाव जगाने के लिए सिलाई के साथ-साथ कम्प्यूटर केन्द्रों को आरम्भ कर सेवा के क्षेत्र में नए-नए प्रयोग कर रही है। इस कार्य में महिलाओं का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। शिक्षिका, निरीक्षिका के साथ-साथ महिला कार्यकर्ताओं की टोलियाँ बस्ती सम्पर्क के द्वारा बस्तियों में घर-घर सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना का विस्तार कर रही हैं।

देश-विदेश का भ्रमण करते हुए स्वामी जी असंख्य लोगों के सम्पर्क में आये। इस दौरान वे मानव मन की कमजोरियों को भी भली प्रकार जान गए थे। स्वामी जी कहते हैं, ''कमजोरी का इलाज कमजोरी का विचार नहीं पर शक्ति का विचार करना है...। हमने अपने हाथ अपनी आँखों पर रख लिए हैं और चिल्लाते हैं कि सब ओर अंधेरा है।''

यदि ये सद्गुण हमारे पास हैं, तभी हम स्वामी जी की आकांक्षाओं की पूर्ति कर सकते हैं, यही स्वामी जी की इच्छा और आशीर्वाद है।

यह प्रसन्नता की बात है कि आज सेवा भारती के हजारों कार्यकर्ता स्वामी विवेकानंद जी के सपनों को साकार करने में दिन-रात एक कर रहे हैं। ❐

पाथेय

उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम्।
विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः।।

सरलार्थ : शरीर को छोड़कर जाते हुए को अथवा शरीर में स्थित हुए को अथवा विषयों को भोगते हुए को, इस प्रकार तीनों गुणों से युक्त हुए को भी अज्ञानी जन नहीं जानते। केवल ज्ञान रूप नेत्रों वाले विवेकशील ज्ञानी ही तत्व से जानते हैं।

शाश्वत धर्म

सज्जन को कभी किसी सज्जन से कपट नहीं करना चाहिए। भला आदमी यदि किसी भले आदमी से छल कर बैठता है तो उसे फिर जन्मभर उससे दबकर रहना पड़ता है। भगवान लक्ष्मीपति ने वृंदा से छल किया था। इससे वह तुलसी के रूप में भगवान के सिर विराजमान रहती हैं और भगवान वामन जी ने राजा बलि से छल किया, तो उनकी भी वही गति हुई। उन्हें उसका द्वारपाल बनकर रहना पड़ा। भले व्यक्ति का स्वभाव दूसरों का हित करने का होता है, परंतु यदि कभी परिस्थितिवश वह किसी भले आदमी से छल कर लेता है तो सारा जीवन उसके आगे सिर नहीं उठा पाता है।

- गोस्वामी तुलसीदास

जनवरी, 2021 मास के स्मरणीय दिवस

08.01.2021	शुक्रवार	पार्श्वनाथ और चन्द्रप्रभु जयंती (जैन)	14.01.2021	गुरुवार	मकर संक्रांति, खरमास समाप्त
09.01.2021	शनिवार	सफला एकादशी व्रत	20.01.2021	बुधवार	गुरु गोबिंद सिंह प्रकाश दिवस
10.01.2021	रविवार	प्रदोष व्रत	23.01.2021	शनिवार	नेताजी सुभाषचंद्र जयंती
11.01.2021	सोमवार	मास शिवरात्रि	24.01.2021	रविवार	पुत्रदा एकादशी व्रत
12.01.2021	मंगलवार	स्वामी विवेकानंद जयंती	26.01.2021	मंगलवार	गणतंत्र दिवस
13.01.2021	बुधवार	लोहड़ी	28.01.2021	गुरुवार	पौष पूर्णिमा, माघ स्नान प्रारंभ

- अधर्म का पालन करने से मन अशुद्ध हो जाता है और गलत कार्यों की ओर मुड़ जाता है।
- पारिवारिक स्नेह में व्यक्ति अपने कर्तव्य-पथ से भटक जाता है और गलत दिशा की ओर मुड़ जाता है। इससे बचते हुए उसे तटस्थ बने रहना चाहिए।

नरेन्द्र ऐसे बने स्वामी विवेकानंद

■ ऋषिदेव

हम हनुमान के विचार के बिना श्रीराम के बारे में नहीं सोच सकते, या अर्जुन को याद किये बिना श्रीकृष्ण का स्मरण नहीं कर सकते। यही सम्बंध श्रीरामकृष्ण तथा स्वामी विवेकानन्द के बीच है, क्योंकि यदि एक जल-स्रोत था तो दूसरा उस जल-स्रोत का प्रवाह रूप झरना था। श्रीरामकृष्ण के लिए ईश्वर एक तथ्य तथा एक वास्तविकता थी। उन्हें ईश्वर के बारे में वाद-विवाद करने की आवश्यकता नहीं थी। वे दृढ़ विश्वास पूर्वक ईश्वर की पुष्टि कर सकते थे। वे भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति के शिखर थे। उनका दृष्टिकोण वैश्विक, उनकी अनुभूति सर्वस्पर्शी, सर्वसमावेशक थी। स्वामी विवेकानन्द उनके प्रधान छात्र, उनके अत्यन्त प्रिय शिष्य, उनके महानतम उत्तराधिकारी, उनके यथार्थ भाष्यकार तथा अत्यन्त दक्ष कार्यवाहक भी थे।

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी, सन् 1863 में पावन मकर संक्रांति के दिन कोलकाता में हुआ था। उनके पिता कोलकाता के प्रसिद्ध वकील विश्वनाथ दत्त थे तथा उनकी माता भुवनेश्वरी देवी अत्यन्त सुसंस्कृत एक कुलीन महिला थीं। माता-पिता ने बच्चे का नाम 'नरेन्द्रनाथ' रखा तथा माता (भुवनेश्वरी देवी) का विश्वास था कि भगवान् शिव के प्रति आन्तरिक प्रार्थना के फलस्वरूप ही इस पुत्र की प्राप्ति हुई है। बालक नरेन्द्रनाथ घर तथा पड़ोस में सभी का दुलारा था तथा अति नटखट तथा फुर्तीला था। उसमें इतना जोश तथा उत्साहपूर्ण ओज था कि घरवालों को उसे वश में करना या उस पर नियंत्रण रखना अति कठिन था। वह देह से दृढ़िष्ठ तथा बलिष्ठ होकर वर्धित हुआ तथा सभी प्रकार के खेलकूद में निपुण था। खेलकूद की तरह ही वह पढ़ाई में भी उतना ही बढ़-चढ़कर था। वह श्रेष्ठतम अन्तर्जात तथा अर्जित प्रतिभा से मण्डित मेधावी छात्र था। उसका पठन-पाठन का क्षेत्र व्यापक, ग्रहणक्षमता तीक्ष्ण, स्मरणशक्ति अतिधारणक्षम थी तथा आयु की तुलना में विवेक-विचार योग्यता भी अद्भुत थी। बाल्यकाल से ही वह उच्च आध्यात्मिक चेतना से भरपूर तथा गम्भीर ध्यानमग्नता में रुचि रखानेवाला था; बाल्यावस्था में ही उसमें ऐसी अनेक विलक्षण गहन शक्तियां प्रकट हुई थीं जो उसकी आयु के अन्य बालकों में बिल्कुल नहीं थीं। बालक नरेन्द्रनाथ चुनौती का स्वागत करनेवाला था तथा भय का नाम तक नहीं जानता था। विद्यालय तथा महाविद्यालय में ही सैकड़ों विशिष्टताओं तथा उत्कर्षों ने उसे मेधा सम्पन्न मनुष्य के रूप में लक्षित कर दिया।

नरेन्द्रनाथ विचारशील था तथा ईश्वरविषयक प्रश्न उसे व्याकुल किया करता था। उसकी सशक्त बुद्धि केवल क्षीण विश्वास तथा रूढ़िगत आस्था के आधार पर ही बातों को मानने को तैयार नहीं थी। ईश्वर के अन्वेषण में संदेहग्रस्त यह युवक इधर-उधर भटकता रहा। परन्तु उसका यह प्रयत्न वृथा रहा। ईश्वर की खोज

में तो वह लगभग हताश ही हो बैठा था तथा उसने प्राय: यही निष्कर्ष निकाल लिया था कि ईश्वर केवल किसी विक्षिप्त व्यक्ति के विचार की ही उपज है। यह तो हितैषी तथा न्यायपूर्ण नियति ही थी जो उसे श्रीरामकृष्ण के पास ले गयी।

उसने महापुरुष (श्रीरामकृष्ण) से पूछा कि क्या उन्होंने ईश्वर को देखा है? श्रीरामकृष्ण ने स्मित हास्यपूर्वक उत्तर दिया कि न केवल उन्होंने ईश्वर के दर्शन किये हैं परन्तु वे नरेन्द्र को भी ईश्वर के दर्शन करा सकते हैं। इस प्रकार महाविद्यालय में शिक्षित बुद्धिवादी ने इस साधारण तथा सीधे-सादे मंदिर-पुजारी में अपना गुरु तथा उद्धारक पाया।

लगभग पांच वर्ष नरेन्द्रनाथ श्रीरामकृष्ण के सान्निध्य में रहा तथा उनके द्वारा शिक्षित तथा प्रशिक्षित हुआ। प्रबल अन्तर्मंथन की इस अल्पावधि के पश्चात् नरेन्द्रनाथ ने एक परमहंस की समस्त अतिमानवीय प्रज्ञा को आत्मसात् कर लिया था तथा वह उनके स्वरूप के अनुरूप रूपान्तरित हो गया।

1886 में श्रीरामकृष्ण की महासमाधि हुई, उस समय नरेन्द्रनाथ 23 वर्ष का भी नहीं हुआ था। श्रीरामकृष्ण के ध्येय को कार्यान्वित करने हेतु नरेन्द्र के युवा कंधों पर विराट भार आ पड़ा। यह आसान कार्य नहीं था, परन्तु यदि कोई इसे निष्पादित करने में सक्षम था तो वह नरेन्द्र नाथ ही था जो इसके लिए उपयुक्त मस्तिष्क तथा बल-सामर्थ्य से युक्त था। उसने गृहत्याग कर दिया, अब स्वामी विवेकानन्द बन गया, उन्होंने एक मठ की स्थापना की जहां वे तथा उनके गुरुभ्रातागण तपश्चर्यादि जारी रख सकें। तत्पश्चात् उन्होंने परिव्राजक संन्यासी होकर भारत की प्रव्रज्या की। उन्होंने अपनी मातृभूमि का विश्लेषण करते हुए, उसकी समस्याओं को प्रत्यक्ष समझते हुए तथा उसके पुनरुत्थान के लिए समाधान ढूंढते हुए उत्तरी छोर में हिमालय से लेकर दक्षिणी छोर में कन्याकुमारी तक भ्रमण किया। यह तीर्थयात्रा उनके जीवन की अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक थी तथा उनके भ्रमणकाल में आनेवाले अनेक प्रसंग उनके व्यक्तित्व की बहुमुखी प्रतिभासम्पन्नता तथा अप्रतिरोध्य आकर्षण की मनोहारी झलकियां हैं।

सन् 1893 के मई मास में स्वामी जी शिकागो में सितम्बर मास में होनेवाली विश्वधर्ममहासभा में भाग लेने के लिए भापचलित जलयान द्वारा रवाना हुए। उन्हें औपचारिक रूप से निमंत्रित या उनका नाम प्रतिनिधियों की सूची में शामिल नहीं किया गया था। कुछ कठिनाई के पश्चात् उन्होंने धर्ममहासभा में सम्मिलित होने का सुभीता कर लिया; सम्मिलित न होने देने की किसी भी कठिनाई की तुलना में वे कहीं अधिक प्रदीप्तप्रतिभासम्पन्न थे। परन्तु तब यह प्रथम वक्तव्य में ही दिग्विजय की बात थी। जब गरिमापूर्ण सभा को सम्बोधित करने की उनकी बारी आयी तब वे उषाकाल के सूर्य की भांति उठे तथा 'अमेरिका की बहिनो तथा भाइयो!', ये शब्द कहे। उस हार्दिक पुकार ने विश्वधर्ममहासभा तथा पश्चिमी जगत् को मंत्रमुग्ध कर दिया। वे संकीर्णता में जकड़े धर्म-पन्थों तथा बौने मतवादों से ऊपर उठकर समन्वय तथा सार्वभौमिकता के बारे में बोले। उनका संदेश मानो दमघुटे लोगों के लिए जीवनश्वास था। वे व्याख्यान करते हुए तथा पश्चिमी देशों के निवासियों को शिक्षित करते तथा उन्हें भारतीय दर्शन के अध्ययन में सहायता करते हुए कई मास तक अमेरिका में रहे। तत्पश्चात् वे इंग्लैंड तथा यूरोप गये। वे पौर्वात्य तथा पाश्चात्य के बीच आपसी समझ के लिए सेतु बने।

सन् 1897 में में स्वामीजी भारत लौटे। समूचा राष्ट्र एकीकृत होकर उनके स्वागत के लिए उठा। भारतीय जनता ने उन्हें आदि शंकराचार्य के नूतन अवतार के रूप में पाया जो मातृभूमि को ओजपूर्ण तथा जीवनशक्ति से स्फूर्त करने को उठ खड़ा हुआ था। स्वामीजी ने अपने देशवासियों को भारतीय राष्ट्रीय आदर्श-त्याग के महान् आदर्श का स्मरण कराया; उन्होंने भारतीयों के हृदयों में यह बात प्रविष्ट करा दी कि भारत में जन्म-प्राप्ति परमसौभाग्य की बात है तथा उन्हें बताया कि किस प्रकार आध्यात्मिक संस्कृति ही भारत के अनश्वर अस्तित्व का रहस्य है। उन्होंने भारत को 'प्रबुद्ध भारत'

बना दिया।

परन्तु वे सलाह देने या उपदेश देने तक ही सीमित नहीं रहे। वे कुशल संगठनकर्ता थे तथा उन्होंने अपने गुरुदेव के ध्येय की निरन्तरता को सुनिश्चित बनाये रखने के लिए एक संगठन की स्थापना करनी चाही। इसलिए उन्होंने रामकृष्ण मठ तथा मिशन की स्थापना की जिसका मुख्यालय कोलकाता के निकट बेलुर मठ है। इस संस्था का उद्देश्य 'आत्मनो मोक्षार्थं जगद्धिताय च' अर्थात् अपनी मुक्ति एवं संसार का कल्याण भी।

स्वामी विवेकानन्द अभी चालीस वर्ष के भी नहीं हुए थे कि वे महासमाधि में लीन हो गये। परन्तु उनकी आयु की गणना और सौर वर्षों के आधार पर नहीं होनी चाहिए। लगभग एक दशक के लोकार्पित कार्य द्वारा ही उन्होंने मानसचेतना में ऐसे विचार आरोपित कर दिये जिनके सम्पूर्ण क्रियान्वयन के लिए डेढ़ हजार वर्ष लग सकते हैं। उनके जीवनकार्य का एक तो भारतीय पक्ष है तथा दूसरा अन्तरराष्ट्रीय पक्ष है, इन दोनों क्षेत्रों में उनका योगदान बेजोड़ है। ❐

श्रद्धांजलि

श्री ओमप्रकाश पाठक नहीं रहे

सेवा भारती के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री ओमप्रकाश पाठक का 18 दिसंबर को निध न हो गया। वे लगभग 93 वर्ष के थे। इनका जन्म 1928 में फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश) जिले के गांव कोटकी में हुआ था। बिरला मिल में नौकरी करने के लिए वे दिल्ली आ गए और फिर दिल्ली के ही होकर रह गए। इसके साथ ही वे संघ के स्वयंसेवक बने। 1983 में सेवा भारती से जुड़े। तब से लेकर अब तक वे सेवा भारती से जुड़े रहे। पारिवारिक दायित्वों से मुक्त होने के बाद वे पूरी तरह सेवा भारती के कार्य में लग गए थे। वे रविदासपुरी में रहते थे। जब भी अपने घर से निकलते थे तो लोग उन्हें 'सेवा भारती वाले बाबाजी' के नाम से आदर देते थे, नमस्कार करते थे। आज रविदासपुरी में सेवा भारती के नौ केन्द्रों में लगभग 50 सेवा प्रकल्प चल रहे हैं। इनके पीछे पाठक जी की कड़ी मेहनत है। उनसे प्रेरणा लेकर अनेक लोग समाज सेवा में आए। स्व. पाठक जी को हार्दिक श्रद्धांजलि। ❐

श्री रामचन्द्र जी का स्वर्गवास

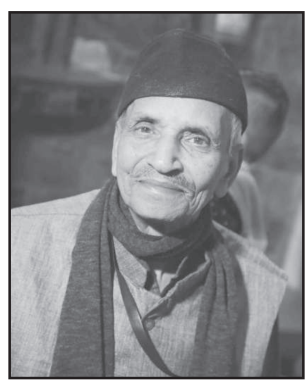

सेवा भारती, यमुना विहार विभाग के वरिष्ठ मार्गदर्शक श्री रामचन्द्र जी का 30 दिसंबर, 2020 को निधन हो गया। वे थैले वाले के नाम से प्रसिद्ध थे। मूल रूप से चांदनी चौक क्षेत्र के स्वयंसेवक थे। उनका थैले बनाने का काम था परंतु संघ कार्य को सदा प्राथमिकता दी। अपने बच्चों को काम संभलवाकर स्वयं पूरे समय संघ के कार्य में देने लगे। बाद में यमुना पार के भजनपुरा क्षेत्र में निवास करने लगे। यमुना विहार विभाग के कार्यवाह के नाते दायित्व निभाते रहे। सामूहिक विवाहों के आयोजन में आर्थिक सहयोग दिलाने में रामचंद्र जी का प्रमु सहयोग रहता था। उनका अनुभव और उनकी तेजस्वी वाणी हम सबका सदैव मार्गदर्शन करती थी। उनका सभी कार्यकर्ता श्रद्धापूर्वक स्मरण करते रहेंगे। ❐

दान का पर्व है मकर संक्रांति

■ होलिका कुमारी

मकर संक्रांति हिन्दुओं का प्रमुख पर्व है। यह पर्व पूरे भारत में किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। पौष मास में जब सूर्य मकर राशि पर आता है तब इस पर्व को मनाया जाता है। यह त्योहार जनवरी माह के तेरहवें, चौदहवें या पन्द्रहवें दिन (जब सूर्य धनु राशि को छोड़ मकर राशि में प्रवेश करता है) पड़ता है। मकर संक्रांति के दिन से सूर्य की उत्तरायण गति प्रारम्भ होती है। इसलिए इसको उत्तरायणी भी कहते हैं। तमिलनाडु में इसे पोंगल नामक उत्सव के रूप में मनाते हैं जबकि कर्नाटक, केरल तथा आंध्र प्रदेश में इसे केवल 'संक्रांति' कहते हैं। सम्पूर्ण भारत में मकर संक्रांति विभिन्न रूपों में मनाया जाता है। हरियाणा और पंजाब में इसे लोहड़ी के रूप में मनाया जाता है। इस दिन अंधेरा होते ही आग जलाकर अग्नि पूजा करते हुए तिल, गुड़, चावल और भुने हुए मक्के की आहुति दी जाती है। इस सामग्री को तिलचौली कहा जाता है। इसअवसर पर लोग मूंगफली, तिल की गजक, रेवड़ियां आपस में बांटकर खुशियां मनाते हैं। बहुएं घर घर जाकर लोकगीत गाकर लोहड़ी मांगती हैं। नई बहू और नवजात बच्चे के लिए लोहड़ी का विशेष महत्व होता है। इसके साथ पारंपरिक मक्के की रोटी और सरसों साग का भी लुत्फ उठाया जाता है।

उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश में यह मुख्य रूप से 'दान का पर्व' है। इलाहाबाद में यह पर्व माघ मेले के नाम से जाना जाता है। 14 जनवरी से इलाहाबाद में हर साल माघ मेले की शुरुआत होती है। 14 दिसम्बर से 14 जनवरी का समय खर मास के नाम से जाना जाता है। और उत्तर भारत में तो पहले इस एक महीने में किसी भी अच्छे कार्य को अंजाम नहीं दिया जाता था। मसलन शादी-ब्याह नहीं किये जाते थे पर अब तो समय के साथ लोग काफी बदल गए हैं। 14 जनवरी यानी मकर संक्रांति से अच्छे दिनों की शुरुआत होती है। माघ मेला पहला नहान मकर संक्रांति से शुरू होकर शिवरात्रि तक यानी आखिरी नहान तक चलता है। संक्रांति के दिन नहान के बाद दान करने का भी चलन है। बागेश्वर में बड़ा मेला होता है। वैसे गंगास्नान रामेश्वर चित्रशिला व अन्य स्थानों में भी होते हैं। इस दिन गंगा स्नान करके, तिल के मिष्ठान आदि को ब्राह्मणों व पूज्य व्यक्तियों को दान

दिया जाता है। इस पर्व पर भी क्षेत्र में गंगा एवं रामगंगा घाटों पर बड़े मेले लगते हैं। समूचे उत्तर प्रदेश में इस व्रत को खिचड़ी के नाम से जाना जाता है तथा इस दिन खिचड़ी सेवन एवं खिचड़ी दान का अत्यधिक महत्व होता है।

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र में इस दिन सभी विवाहित महिलाएं अपनी पहली संक्रांति पर कपास, तेल, नमक आदि चीजें अन्य सुहागिन महिलाओं को दान करती हैं। तिल-गूल नामक हलवे के बांटने की प्रथा भी है। लोग एक-दूसरे को तिल गुड़ देते हैं और देते समय बोलते हैं- 'लिळ गूळ ध्या आणि गोड़ गोड़ बोला' अर्थात् तिल गुड़ लो और मीठा मीठा बोलो। इस दिन महिलाएं आपस में तिल, गुड़, रोली और हल्दी बांटती हैं।

पश्चिम बंगाल

बंगाल में इस पर्व पर स्नान पश्चात् तिल दान करने की प्रथा है। यहां गंगासागर में प्रतिवर्ष विशाल मेला लगता है। मगर संक्रांति के दिन ही गंगाजी भगीरथ के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होकर सागर में जा मिली थीं। मान्यता यह भी है कि इस दिन यशोदा जी ने श्रीकृष्ण को प्राप्त करने के लिए व्रत किया था। इस दिन गंगासागर में स्नान-दान के लिए लाखों लोगों की भीड़ होती है। लोग कष्ट उठाकर गंगा सागर की यात्रा करते हैं। वर्ष में केवल एक दिन मकर संक्रांति को यहां लोगों की अपार भीड़ होती है। इसीलिए कहा जाता है- 'सारे तीरथ बार बार लेकिन गंगा सागर एक बार।'

तमिलनाडु

तमिलनाडु में इस त्योहार को पोंगल के रूप में चार दिन तक मनाते हैं। प्रथम दिन भोगी-पोंगल, द्वितीय दिन सूर्य-पोंगल, तृतीय दिन मट्टू-पोंगल अथवा केनू-पोंगल, चौथे व अंतिम दिन कन्या-पोंगल। इस प्रकार पहले दिन कूड़ा करकट इकट्ठा कर जलाया जाता है, दूसरे दिन लक्ष्मी जी की पूजा की जाती है और तीसरे दिन पशु धन की पूजा की जाती है। पोंगल मनाने के लिए स्नान करके खुले आंगन में मिट्टी के बर्तन में खीर बनाई जाती है, जिसे पोंगल कहते हैं। इसके बाद सूर्य देव को नैवेद्य चढ़ाया जाता है। उसके बाद खीर को प्रसाद के रूप में सभी ग्रहण करते हैं। इस दिन बेटी और जमाई राजा का विशेष रूप से स्वागत किया जाता है।

असम

असम में मकर संक्रांति को माघ-बिहू अथवा भोगाली-बिहू के नाम से मनाते हैं। राजस्थान में इस पर्व पर सुहागन महिलाएं अपनी सास को बायना देकर आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। साथ ही महिलाएं किसी भी सौभाग्यसूचक वस्तु का चौदह की संख्या में पूजन एवं संकल्प कर चौदह ब्राह्मणों को दान देती हैं। अतः मकर संक्रांति के माध्यम से भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की झलक विविध रूपों में दिखती है।

शास्त्रों के अनुसार, दक्षिणायन को देवताओं की रात्रि अर्थात् नकारात्मकता का प्रतीक तथा उत्तरायण को देवताओं का दिन अर्थात् सकारात्मकता का प्रतीक माना गया है। इसीलिए इस दिन जप, तप, दान, स्नान, श्राद्ध, तर्पण आदि धार्मिक क्रियाकलापों का विशेष महत्व है। धारणा है कि इस अवसर पर दिया गया दान सौ गुना बढ़कर पुनः प्राप्त होता है। इस दिन शुद्ध घी एवं कंबल दान मोक्ष की प्राप्ति करवाता है।

यथा-

माघे मासि महादेव यो दाद घृतकंबलम्।
स भुक्त्वा सकलान भोगान अंते मोक्षं च विंदति॥

मकर संक्रांति के अवसर पर गंगा स्नान एवं गंगा तट पर दान को अत्यंत शुभकारक माना गया है। इस पर्व पर तीर्थराज प्रयाग एवं गंगासागर में स्नान को महास्नान की संज्ञा दी गई है। सामान्यतः सूर्य सभी राशियों को प्रभावित करते हैं, किन्तु कर्क व मकर राशियों में सूर्य का प्रवेश धार्मिक दृष्टि से अत्यंत फलदायक है। यह प्रवेश अथवा संक्रमण क्रिया छः-छः माह के अंतराल पर होती है। भारत देश उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। मकर संक्रांति से पहले सूर्य्र दक्षिणी गोलार्ध में होता है अर्थात् भारत से दूर होता है। इसी कारण यहां रातें बड़ी एवं दिन छोटे होते हैं तथा सर्दी का मौसम

होता है, किन्तु मकर संक्रांति से सूर्य उत्तर का मौसम शुरू हो जाता है। दिन बड़ा होने से प्रकाश अधिक होगा तथा रात्रि छोटी होने से अंधकार कम होगा। अत: मकर संक्रांति पर सूर्य की राशि में हुए परिवर्तन को अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होना माना जाता है। प्रकाश अधिक होने से प्राणियों की चेतनता एवं कार्यशक्ति में वृद्धि होगी। ऐसा जरनकर सम्पूर्ण भारतवर्ष में लोगों द्वारा विविध रूपों में सूर्यदेव की उपासना, आराधना एवं पूजन कर, उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की जाती है। सामान्यत: भारतीय पंचांग की समस्त तिथियां चन्द्रमा की गति को आधार मानकर निर्धारित की जाती हैं, किन्तु मकर संक्रांति को सूर्य की गति से निर्धारित किया जाता है। इसी कारण यह पर्व प्रतिवर्ष 14 जनवरी को ही पड़ता है।

माना जाता है कि इस दिन भगवान भास्कर अपने पुत्र शनि से मिलने स्वयं उसके घर जाते हैं। चूंकि शनिदेव मकर राशि के स्वामी हैं, अत: इस दिन को मकर संक्रांति के नाम से जाना जाता है। महाभारत काल में भीष्म पितामह ने अपनी देह त्यागने के लिए मकर संक्रांति का ही चयन किया था। मकर संक्रांति के दिन ही गंगाजी भगीरथ के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होकर सागर में जा मिली थीं। ❐

'द्रविणं' का यह अर्थ है

■ प्रतिनिधि

एक बहुत ही प्रसिद्ध प्रार्थना है-

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सवा त्वमेव।
त्वमेव विद्या च द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वम् मम देवदेवं॥

सोच कर देवें, इसका अत्यंत सरल-सा अर्थ है। बचपन से प्राय: यह प्रार्थना हम सबने पढ़ी है। मैंने अपने कई मित्रों से पूछा होगा, 'द्रविणं' का क्या अर्थ है? अच्छे वासे पढ़े-लिवे भी एक ही शब्द 'द्रविणं' पर सोच में पड़ गए। द्रविणं पर चकराते हैं और अर्थ जानकर चौंक पड़ते हैं। 'द्रविणं' जिसका अर्थ है द्रव्य, धन-संपत्ति। अर्थात द्रव्य जो तरल है, जो निरंतर प्रवाहमान, गतिमान, चलायमान है। यानी वह जो कभी स्थिर नहीं रहता। सच में आविर 'लक्ष्मी' भी कहीं टिकती है क्या?

कितनी सुंदर प्रार्थना है और उतना ही प्रेरक उसका वरीयता क्रम। जरा देविए तो! समझिए तो!

सबसे पहले माता क्योंकि वह है तो फिर संसार में किसी की जरूरत ही नहीं। इसलिए हे प्रभु! तुम माता हो!

फिर पिता, अत: हे ईश्वर! तुम पिता हो! दोनों नहीं हैं तो फिर भाई ही काम आएंगे। इसलिए तीसरे क्रम पर भगवान से भाई का रिश्ता जोड़ा है।

जिसकी न माता रही, न पिता, न भाई तब सवा काम आ सकते हैं, अत: सवा त्वमेव!

वे भी नहीं तो आपकी विद्या ही काम आती है। यदि जीवन के संघर्ष में नियति ने आपको निपट अकेला छोड़ दिया है तब आपका ज्ञान ही आपका भगवान बन सकेगा। यही इसका संकेत है।

और सबसे अंत में 'द्रविणं' अर्थात् धन। जब कोई पास न हो तब हे देवता तुम्हीं धन हो।

रह-रहकर सोचता हूं कि प्रार्थनाकार ने वरीयता क्रम में जिस धन-द्रविणं को सबसे पीछे रवा है, वही धन आजकल हमारे आचरण में सबसे ऊपर क्यों आ जाता है? इतना कि उसे ऊपर लाने के लिए माता से पिता, बंध ु से सवा तक सब नीचे चले जाते हैं, पीछे छूट जाते हैं।

वह कीमती है, पर उससे ज्यादा कीमती माता, पिता, भाई, मित्र, विद्या हैं। उससे बहुत ऊँचे आपके अपने।

बार-बार ख्याल आता है, द्रविणं सबसे पीछे बाकी रिश्ते ऊपर। बाकी लगातार ऊपर से ऊपर, धन क्रमश: नीचे से नीचे! ❐

करें योग, भगाएं रोग

■ डॉ. सुरक्षित गोस्वामी

कोरोना काल में सुबह-शाम योग करने से रोगप्रतिरोधक क्षमता तो बढ़ेगी ही साथ ही शरीर और मन भी स्वस्थ रहेगा। योग-व्यायाम सुबह खाली पेट करना ही ठीक रहता है। रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए अश्वगंधा व हल्दी पाउडर, विटामिन सी व जिंक का सेवन करें। गिलोय, काली मिर्च, तुलसी व अदरख का काढ़ा पीना भी लाभकारी होगा। खूब पानी पीएं। नींद पूरी लें। हल्का सात्विक भोजन लें। मन को प्रसन्न रखें।

कपालभाति

पालथी लगाकर सीधे बैठें, आँखे बंदकर हाथों को ज्ञान मुद्रा में रख लें। ध्यान को सांस पर लाकर सांस की गति को अनुभव करें। अब इस क्रिया को शुरू करें इसके लिए पेट के नीचले हिस्से को अन्दर की ओर खींचें व नाक से सांस को बल के साथ बाहर फेंके। यह प्रक्रिया बार-बार इसी प्रकार बार-बार तब तक करते जाएं जब तक थकान सी न लगे। फिर पूरी सांस बाहर निकाल दें और सांस को सामान्य करके आराम से बैठ जाएं। कपालभाति के बाद मन शांत, सांस धीमा व शरीर स्थिर हो जाता है, कुछ समय के लिए ध्यान की अवस्था में बैठे रहें। यह एक राउंड कपालभाति है। एक राउंड में जितनी बार आप आराम से सांस बाहर फेंक सकें उतना ही करें। इस प्रकार इसका तीन से चार राउंड अभ्यास कर लें।

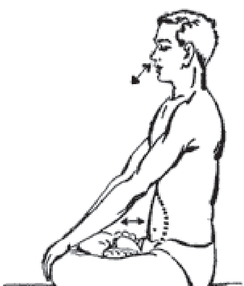

सावधानी- हाई बीपी, हृदय रोग में इसका अभ्यास गाइडेंस में करें। हर्निया, अल्सर व पेट का आपरेशन हुआ हो तो इसका अभ्यास न करें। महिलाओं को गर्भावस्था व मासिक धर्म के दिनों में यह अभ्यास नहीं करना चाहिए।

लाभ- भाव रखें निकलती हुई सांस अपने साथ अन्दर के विकारों को बाहर निकाल रही है। पेट के बार-बार अन्दर जाने से पाचन तंत्र के अंग जैसे अमाशय, आंतें, लीवर, किडनी, पेंक्रियाज आदि अंग स्वस्थ होते हैं। इससे मोटापा, डायबटीज, कब्ज, गैस, भूख ना लगना व अपच आदि पेट के रोग ठीक होते हैं। यह बाल झड़ने से बचाव करती है हृदय, फेफड़े, थायरायड व मष्तिष्क को बल मिलता है। खून में आक्सीजन की मात्रा बढ़कर रक्त शुद्ध होने लगता है। महिलाओं में मासिक धर्म की अनियमितता, कष्टार्तव, श्वेत प्रदर, आदि को ठीक कर गर्भाशय व ओवरी को बल देती है । इसके अभ्यास से हारमोंस संतुलित रहते हैं व शरीर में गांठे नहीं पड़ने देती हैं। यह क्रिया शरीर का वजन संतुलित कर युवा बनाए रखती है!

अग्निसार क्रिया

खड़े हो जाएं और दोनों पैरों को थोड़ा खोल लें। अब पूरी सांस भरें और अच्छी तरह से सारी सांस बाहर निकालते हुए आगे झुंकें व हाथों को जंघाओं पर रख लें। अब सांस को बाहर ही रोक कर रखें व हाथों से पैरों पर जोर डालते हुए पेट को अन्दर की ओर खींचें और फिर बाहर की ओर ढीला छोड़ें। इस प्रकार जब तक सांस बाहर रोक सकें, तब तक लगातार पेट को अंदर-बाहर पम्पिंग की तरह

हिलाते रहें। फिर जब लगे अब सांस नहीं रोक सकते, तब पेट को ढीला छोड़ दें और सांस भर कर आराम से सीधे खड़े हो जाएं। थोड़ा आराम करने के बाद इस क्रिया को फिर से दोहरा लें। 3 से 4 बार क्रिया का अभ्यास कर लें।

सावधानियाँ– पेप्टिक अल्सर, कोलाईटिस, हर्निया या पेट का आपरेशन हुआ हो तो इसका अभ्यास न करें। स्त्रियाँ मासिक धर्म के दिनों में और गर्भावस्था में इसका अभ्यास न करें।

लाभ– इससे पेट के सभी अंगों को अधिक मात्रा में रक्त मिलने लगता है। जिससे आमाशय, लीवर, आंतें, किडनी, मलाशय व मूत्राशय को बल मिलता है और इनसे सम्बन्धित रोग नहीं होते। कब्ज, गैस, डकार, अफारा, भूख न लगना आदि पाचन तंत्र के रोग ठीक जाते हैं। अतः प्रतिदिन इसका अभ्यास करने से कभी पेट के रोग परेशान नहीं करते। इसके अभ्यास से कभी पेट बाहर नहीं निकलता। मोटापा दूर होने लगता है। डायबटीज में यह क्रिया राम बाण की तरह कार्य करती है। नपुंसकता को दूर कर युवा अवस्था को बनाए रखने में बड़ी उपयोगी है!

उत्तानपादासन

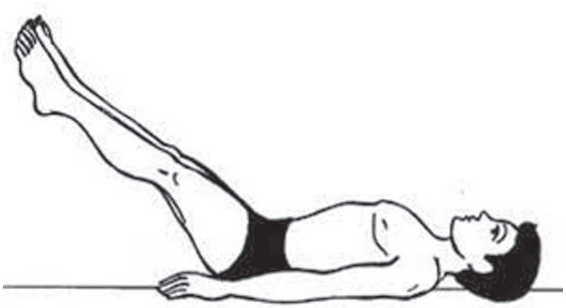

विधि– कमर के बल सीधे लेट जाएं। पैरों को आपस में मिला लें। हाथों को जंघाओं के पास जमीन पर रख लें। हथेलियों का रुख नीचे की ओर रहेगा। अब सांस भरते हुए दोनों पैरों को 60 डिग्री के कोण तक ऊपर उठाकर यहाँ रुक जाएं। हथेलियाँ जमीन पर ही रहेंगी। सांस की गति को सामान्य रखते हुए प्रसन्नता के भाव से यथाशक्ति आसन में रुके रहें। कुछ देर रुकने के बाद आपको पेट के ऊपर कम्पन अनुभव होने लगेगा। फिर वापस आते समय सांस निकालते हुए धीरे से बिना सर उठाये पैरों को नीचे ले आएं। दो से तीन बार इसका अभ्यास कर लें।

सावधानियाँ– कमर दर्द, हर्निया व हाई बीपी में इसका अभ्यास न करें!

लाभ– यह पेट के थुलथुलेपन को दूरकर मोटापे से रोकथाम करता है। इससे कोर मसल्स की मांसपेशियों को मजबूती मिलती है। इन मजबूत मांसपेशियों के कारण पाचन तंत्र बलिष्ठ बना रहता है और यह हृदय व फेफड़ों को स्वस्थ बनाए रखता है। निम्न रक्त चाप में लाभकारी है। चेहरे को तरोताजा बनाये रखता है व कील, मुहांसों से रोकथाम करता है और बालों का झड़ना व सफेद होने से रोकने में भी मदद पहुंचाता है।

सेतुबंधासन

विधि– कमर के बल लेट कर दोनों पैरों को आराम से मोड़ लें और एड़ी को अधिक से अधिक अपने नजदीक ले आएं। यहां पैरों में थोड़ा सा अंतर रहेगा। अब हाथों से पैरों के टखने पकड़ लें, यदि पैर पकड़ने में असुविधा लगे तो हाथों को जंघाओं के पास जमीन पर रख लें। यहाँ पूरी सांस भरें, फिर पूरी सांस निकाल दें और पेट के अन्दर की ओर दबाए सिर व कंधे जमीन पर रखते हुए पैरों पर भार डालते हुए धीरे से कमर को ऊपर की ओर उठा लें। अधिक से अधिक कमर को इतना

ऊपर की ओर उठा लें कि आपकी ठोड़ी छाती से लग जाए। अब सांस को सामान्य रखकर यथाशक्ति आसन में रुके रहें। अधिक से अधिक आसन में रुकने के बाद धीरे से सांस निकालते हुए कमर को वापस जमीन पर ले आएं। इस प्रकार तीन बार अभ्यास कर लें।

सावधानियाँ– हर्निया, अल्सर व गर्दन दर्द में इसका अभ्यास न करें।

लाभ– सेतुबंधासन हमारे नर्वस सिस्टम को बल देकर शरीर में हल्कापन देने वाला है। इससे रीढ़ की हड्डी लचीली रहती है और कमर की मांसपेशियां स्वस्थ बनी रहती हैं। साथ ही घुटनों, जंघाओं व कोर मसल्स को बल मिलता है। रीढ़ की हड्डी के रोगों में यह बड़ा लाभकारी है, इससे कमर दर्द, स्लिप डिस्क व साईटिका दर्द में बड़ी शीघ्रता से आराम आता है। रीढ़ की हड्डी के टेढ़ेपन में भी आराम देने वाला है। ऑस्टियोपोरोसिस में भी यह लाभ देता है। साथ ही हृदय, फेफड़े, पेंक्रियाज, आंत, किडनी, लीवर स्प्लीन, मलाशय व मूत्राशय आदि अंगों पर प्रभाव डालकर उनको स्वस्थ बनाए रखता है। यह अड्रिनल, थाईमस, थायराईड व पैरा थायराईड ग्लैंडस को भी बल देने वाला है। महिलाओं में ओवरी और यूट्स की शक्ति को बढ़ाने वाला है व उनकी मासिक धर्म की अनियमितता को दूर करने में मदद करता है।

पवनमुक्तासन

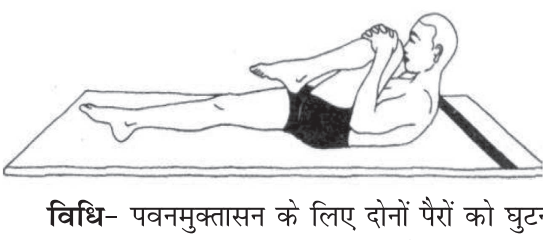

विधि– पवनमुक्तासन के लिए दोनों पैरों को घुटनों से मोड़कर पेट की ओर लाएं व हाथों से पैरों को कसकर पकड़ लें, सांस निकालें यदि कमर या गर्दन में दर्द रहता हो तो सिर न उठाएं, नहीं तो सिर उठाकर ठोड़ी को माथे के बीच लगा दें!

सावधानी– कमर दर्द या गर्दन दर्द रहता हो तो इस आसन में सर न उठायें।

लाभ– यह कब्ज, गैस, भूख न लगना व लीवर की कमजोरी को दूर करने वाला है साथ ही डायबिटीज में बड़ा लाभकारी है। इसके अभ्यास से मूत्रदोष, हर्निया, स्त्री रोग, कमर दर्द, अस्थमा व हृदय रोग में लाभ पहुंचता है!

भुजंगासन

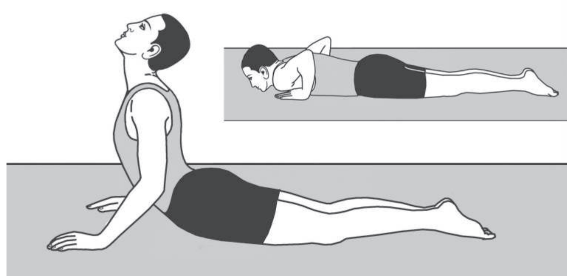

विधि– पेट के बल लेट जाएं, और हाथों को कन्धें के नीचे रखकर कोहनियों को उठा लें। पीछे दोनों पैरों को मिलाकर रखें। अब सांस भरते हुए आगे से सिर व छाती को नाभि तक ऊपर उठाएं, यहाँ शरीर नाभि तक ही उठायें ज्यादा नहीं। अब सिर को ऊपर की ओर उठाकर सांस की गति सामान्य रखते हुए यथाशक्ति रुके रहें। फिर सांस निकालते हुए धीरे से वापस आ जाएं। दो से तीन बार इसका अभ्यास कर लें।

सावधानियाँ– यदि हर्निया या पेट में घाव हो तो इसका अभ्यास न करें!

लाभ– यह रीढ़ की हड्डी को लचीला बनाकर शरीर में हल्कापन देता है, कमर दर्द, स्लिपडिस्क, सरवाईकल स्पोंडोलाईटिस व ओस्टोपोरोसिस में लाभकारी है! आमाशय, लीवर, किडनी, फेफड़े व थाईराईड ग्रंथि को बल देने वाला है!

मंडूकासन

विधि– वज्रासन में बैठ जाएं और हाथों की मुठियां बंदकर पेट पर रख लें, सांस निकालें व पेट अन्दर की ओर दबाएं, मुट्ठियों से भी पेट को दबाकर आगे झुक जाएं! सांस सामान्य रखकर सिर को थोड़ा उठा लें! कोहनियों को भी शरीर के साथ सटा कर रखें!

सावधानया- घुटना म दद हान पर वज्रासन न कर, ऐसे में कुर्सी पर बैठकर ये आसन किया जा सकता है। यदि कमर दर्द रहता हो तो इस आसन में आगे न झुकें।

लाभ- मंडूकासन पेंक्रियाज को सक्रिय करने वाला आसन है इसके अभ्यास से पेंक्रियाज में स्थित बीटा सेल्स इंसुलिन का निर्माण करने लगते हैं और शुगर लेवल शीघ्रता से नियंत्रित होने लगता है! पाचन तंत्र को बल देकर उनसे सम्बन्धित रोगों को ठीक करने वाला है। कब्ज, गैस, डकार, भूख न लगना, अपच, मूत्र दोष, लीवर की कमजोरी, स्त्री रोगों, हर्निया व अस्थमा दूर करने में लाभकारी है। मोटापे को दूर करने में भी सहायक है।

अनुलोम-विलोम प्राणायाम

अनुलोम-विलोम प्राणायाम के लिए सीधे बैठकर आंखें बंदकर लें। सीधे हाथ की प्राणायाम मुद्रा बनाएं। प्राणायाम मुद्रा के लिए तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों को माथे पर रख लें और अंगूठे से दाएं नासारंध्र को बंद करें, अब बाएं नासारंध्र से धीरे-धीरे पूरा सांस बाहर निकाल दें, फिर बाएं नासारंध्र से ही धीरे-धीरे सांस भरें, फिर बाएं नासिका रंध्र को बाकी दो अंगुलियों से बंद कर दाएं नासिका रंध्र से सांस को धीरे-धीरे बाहर निकाल दें। फिर दाएं से ही धीरे-धीरे सांस भरें व बाएं नासिका से निकाल दें। यहां सांस भरने व निकालने की आवाज नहीं होगी। यह एक चक्र अनुलोम-विलोम प्राणायाम कहलाता है। इस प्रकार बार-बार इस अभ्यास को यथाशक्ति करते रहें। अंत में बाई नासिका से सांस बाहर निकालकर हाथ नीचे लाएं व थोड़ी देर के लिए शांत भाव से बैठे रहें।

लाभ- अनुलोम-विलोम प्राणायाम हाई बीपी व तनाव को दूर करने में राम बाण की तरह कार्य करता है। यह शरीर की सभी बहत्तर हजार नाड़ियों में प्राण का संचार कराने में सहायक है, जो नर्वस सिस्टम को ताकत देकर उसकी कमजोरी से होने वाले रोगों में लाभ पहुंचाता है। हृदय, फेफड़े व मस्तिष्क के स्नायु को बल मिलता है जिससे वो स्वस्थ बने रहते हैं। साथ ही यह मन को शांत और एकाग्र करने वाला है। इसके अभ्यास से तनाव, क्रोध, चिन्ता, चिड़चिड़ापन, बैचेनी, हाई ब्लड प्रेशर, माइग्रेन, नींद न आना, अंगों में कम्पन्न, मल्टिपल सिरॉसिस आदि मन-मस्तिष्क के विकारों में लाभ पहुंचाता है। यह हमारे भीतर शान्ति व धैर्य को बढ़ाकर संकल्प शक्ति, निर्णय शक्ति, और संतुलन शक्ति का विकास करता है।

विधि- इसके लिए कमर को सीधा रखते हुए आराम से बैठ जाएं, अब अपने ध्यान को सांसों पर ले आएं और सांस की गति पर ध्यान लाते हुए, अधिक से अधिक सांस बाहर निकाल दें। अब गले की मांसपेशियों को टाईट कर लें और धीरे-धीरे नाक से सांस भरना शुरू करें, सांस भरते समय गले से सांस के घर्षण की आवाज करें। सांस भरते जाएं आवाज होती जाएं। इस प्रकार आवाज के साथ पूरी सांस भर लें। अब सांस भरने के बाद कुछ सेकेण्ड सांस अंदर रोकें। इसके बाद सीधे हाथ की प्राणायाम मुद्रा बनाकर नासिका पर ले जाएं और दायीं नासारंध्र को बंद कर बाई नासारंध्र से धीरे-धीरे सांस बाहर निकाल दें। इस प्रकार 12-15 बार इसका अभ्यास कर लें।

लाभ- इसके अभ्यास से छाती से लेकर मष्तिष्क तक कम्पन्न होने लगता है, जिससे यहां रहने वाली उदान वायु को बल मिलता है और यहां स्थित समस्त अंग स्वस्थ होने लगते हैं। हृदय में होने वाली कम्पन्न से हृदय

में आये ब्लोकेज को दूर होने लगती है। यह प्राणायाम अस्थमा, सांस फूलना व फेफड़ों की कमजोरी में बड़ा लाभकारी है। थाइराईड ग्रंथि के रोग को भी यह दूर करता है और उसको स्वस्थ बनाए रखता है। साथ ही गले में कफ का जमाव व सोते समय खर्राटे की समस्या को दूर करने वाला है। इसके निरंतर अभ्यास से वाणी में मधुरता आती है।

भ्रामरी प्राणायाम

आराम के किसी आसन पर बैठ जाएं, कमर व गर्दन को सीधा रखते हुए आंखें बंद कर लें। अब अंगूठों से कानों को बंद कर लें, जिससे बाहर की आवाज सुनायी न दे व तर्जनी अंगुली को माथे पर रखें जिससे ध्यान आज्ञा चक्र पर लगा रहे व बाकी तीन अंगुलियों को आंखों पर रख लें, जिससे मन में कोई विचार न आए। अब सांस को बाहर निकालें फिर ध ीरे-धीरे अधिक से अधिक सांस अंदर भरें और सांस निकालते हुए नाक से भंवरें जैसी मधुर गूंज करें। सांस निकलती जाएगी और गूंज होती जाएगी। एक बार सांस भरकर गूंज करना एक चक्र भ्रामरी प्राणायाम कहलाता है। इस प्रकार 8-10 बार कर लें। इस प्राणायाम के दौरान यह भाव बनाये रखें कि मेरी चेतना ब्रह्मांडीय चेतना से जुड़ रही है और मेरे भीतर प्रेम, मैत्री व प्रसन्नता का भाव प्रकट हो रहा है।

लाभ- यह मन की चंचलता को दूर कर मन को शांत करने में मदद करता है। इसके अभ्यास से मानसिक तनाव, क्रोध, चिन्ता, डिप्रेशन, चिड़चिड़ापन, अनिद्रा, जल्दबाजी, आलस्य, माइग्रेन आदि मन मस्तिष्क के रोगों में लाभ मिलता है। हाई बीपी, हाथों-पैरों में कम्पन्न व हृदय रोग को दूर कर पूरे तन व मन में ऊर्जा व तरोताजगी का संचार करता है और स्मरण शक्ति को बढ़ाता है। इसके अभ्यास से आज्ञा चक्र में दिव्य ज्योति का अनुभव होने लगता है। यह प्राणायाम ध्यान लगाने में सहायता प्रदान करता है।

ध्यान- आंखें बंद करके प्रेम भाव से बैठ जाएं फिर किसी मंत्र या ऊँ के जाप को पहले 10-12 बार उच्चारण करें उसके बाद वही उसका मन-मन में ही जाप करना शुरू करें ! जब मन में ख्याल हावी होने लगें तब फिर से वाचिक जाप कर लें, थोड़ी देर बाद फिर से मानसिक जाप कर लें, थोड़ी देर बाद फिर से मानसिक जाप करें। इस प्रकार निरंतर जाप करते रहने से एक समय ऐसा आएगा, जब मंत्र खो जाएगा और मन अमन हो जाएगा। ❐

- **सभी मनुष्यों से मित्रता करने से ईर्ष्या की निवृत्ति हो जाती है। दुखी मनुष्यों पर दया करने से दूसरे का बुरा करने की इच्छा समाप्त हो जाती है। पुण्यात्मा को देखकर प्रसन्नता होने से असूया की निवृत्ति हो जाती है। पापियों की उपेक्षा करने से अमर्ष, घृणा आदि के भाव समाप्त हो जाते हैं। यह साधकों क लिए आचार है।**
- **भगवान् की सेवा करो, दास्यभाव से उन पर विश्वास रखो, मित्रभाव से, सख्यभाव से उनसे प्रेम करो, गोपीभाव से उनके आनन्द के लिए या उनके लिए ही केवल सांसारिक कर्तव्य करो।**

'बेला' और 'कल्याणी' भारत की दो वीरांगनाएँ

■ बुधराम हिन्दुस्तानी

आज हमारे समाज को बहुत ऐसी बातें हैं, जिनकी कोई जानकारी नहीं है। जैसे 'बेला' और 'कल्याणी' को ही ले सकते हैं। भारत की ये दो वीरांगना बेटियाँ कौन थीं? नई पीढ़ी को इनके नाम भी शायद नहीं मालूम.. तो सुनो बेला तो पृथ्वीराज चौहान की बेटी थी और कल्याणी जयचंद की पौत्री। मुहम्मद गोरी हमारे देश को लूटकर जब अपने वतन गया तो गजनी के सर्वोच्च काजी व गोरी के आका निजामुल्क ने गोरी का अपने महल में स्वागत करते हुए कहा, ''आओ बुतशिकन (हिंदू देवताओं की प्रतिमा तोड़कर उन्हें अपमानित करने पर इस्लाम में दी जाने वाली उपाधि) गोरी आओ! हमें तुम पर नाज है कि तुमने हिन्दुस्तान पर फतह करके इस्लाम का नाम रोशन किया है। कहो उस सोने की चिड़िया हिन्दुस्तान के कितने पर कतर कर लाए हो।''

गोरी बोला, ''काजी साहब! मैं हिन्दुस्तान से सत्तर करोड़ दिरहम रकम के सोने के सिक्के, चार सौ मन सोना और चांदी, इसके अलावा मूल्यवान आभूषणों, मोतियों, हीरा, पन्ना, जरीदार वस्त्रों और ढाके की मल-मल की लूट-वसोट कर भारत से गजनी की विदमत में लाया हूं।''

''बहुत अच्छा! लेकिन वहां के लोगों को कुछ दीन-ईमान का पाठ पढ़ाया कि नहीं?''

''बहुत से लोग इस्लाम में मुकम्मल हो गए हैं।''

''और बंदियों का क्या किया?''

''बंदियों को गुलाम बनाकर गजनी लाया गया है। अब तो गजनी में बंदियों की सरेआम बोली लगाई जा रही है। एक-एक गुलाम दो-दो या तीन-तीन दिरहम में बिक रहा है।''

''हिन्दुस्तान के काफिरो के मंदिरों का क्या किया?''

''मंदिरों को लूटकर 17 हजार सोने और चांदी की मूर्तियां लायी गयी हैं, दो हजार से अधिक कीमती पत्थरों की मूर्तियां और शिवलिंग भी लाए गये हैं और बहुत से पूजा स्थलों को नष्ट भ्रष्ट कर आग से जलाकर जमींदोज कर दिया गया है।''

फिर थोड़ा रुककर काजी ने कहा, ''लेकिन हमारे लिए भी कोई वास तोहफा लाए हो या नहीं?''

''लाया हूं ना काजी साहब जीती जागती गजल लाया हूं !''

''क्या...?''

''जन्नत की हूरों से भी सुंदर जयचंद की पोती कल्याणी और पृथ्वीराज चौहान की बेटी बेला''

''तो फिर देर किस बात की है?''

''बस आपके इशारेभर की!!''

काजी की इजाजत पाते ही शाहबुद्दीन गोरी ने 'कल्याणी' और 'बेला' को काजी के हरम में पहुंचा दिया। कल्याणी और बेला की अद्भुत सुंदरता को देवकर काजी अचम्भे में आ गया। उसे लगा कि स्वर्ग से अप्सराएं आ गयी हैं। उसने दोनों राजकुमारियों से विवाह का प्रस्ताव रवा तो बेला बोली- ''काजी साहब! आपकी बेगमें बनना तो हमारी वुशकिस्मती होगी, लेकिन हमारी दो शर्तें हैं''....

''कहो..कहो.. क्या शर्तें हैं तुम्हारी! तुम जैसी हूरों के लिए तो मैं कोई भी शर्त मानने के लिए तैयार हूं।''

''पहली शर्त तो यह है कि शादी होने तक हमें अपवित्र न किया जाए? क्या आपको मंजूर है?''

''हमें मंजूर है! दूसरी शर्त बताओ।''

''हमारे यहां प्रथा है कि विवाह के कपड़े लड़की के यहां से आते हैं। अत: दूल्हे का जोड़ा और अपने जोड़े

की रकम हम भारत भूमि से मंगवाना चाहती हैं।''

''मुझे तुम्हारी दोनों शर्तें मंजूर हैं।''

और फिर? बेला और कल्याणी ने कविचंद के नाम एक रहस्यमयी वत लिवकर भारत भूमि से शादी का जोड़ा मंगवा लिया। काजी के साथ उनके निकाह का दिन निश्चित हो गया। रहमत झील के किनारे बनाये गए नए महल में विवाह की तैयारी शुरू हुई। कवि चंद द्वारा भेजे गये कपड़े पहनकर काजी विवाह मंडप में आया। कल्याणी और बेला ने भी काजी द्वारा दिये गये कपड़े पहन रवे थे। शादी को देवने के लिए बाहर भीड़ इकट्ठी हो गयी थी।

तभी बेला ने काजी से कहा, ''हम कलमा और निकाह पढ़ने से पहले जनता को झरोवे से दर्शन देना चाहती हैं, क्योंकि विवाह से पहले जनता को दर्शन देने की हमारे यहां प्रथा है और फिर गजनी वालों को भी तो पता चले कि आपके नसीब में भारत की उत्कृष्ट सुंदरता आई है। शादी के बाद तो हमें जीवन भर बुरका पहनना ही है। तब हमारी सुंदरता का होना न के बराबर ही होगा......''

''हां..हां..क्यों नहीं।''

और वो कल्याणी और बेला के साथ राजमहल के कंगूरे पर गया, लेकिन वहां तक पहुंचते-पहुंचते ही काजी के दाहिने कंधे से आग की लपटें निकलने लगीं, क्योंकि कविचंद ने बेला और कल्याणी का रहस्यमयी पत्र समझकर बड़े तीक्ष्ण विष में सने हुए कपड़े भेजे थे। काजी विष की ज्वाला से पागलों की तरह इधर-उधर भागने लगा, तब बेला ने उससे कहा- ''तुमने ही गोरी को भारत पर आक्रमण करने के लिए उकसाया था ना? हमने तुझे मार कर अपने देश को लूटने का बदला ले लिया है। हम हिन्दू कुमारियां हैं समझा....''

किसमें इतना साहस है जो जीते जी हमारे शरीर को छू भी सके।

इतना कहकर उन दोनों बालिकाओं ने महल की छत के बिल्कुल किनारे वड़ी होकर एक-दूसरी की छाती में विष बुझी कटार भोंक दी और उनकी प्राणहीन देह उस उंची छत से नीचे लुढ़क गई।

पागलों की तरह इधर-उधर भागता हुआ काजी भी जल कर तड़प-तड़प कर वाक हो गया।

भारत की इन दोनों बहादुर बेटियों ने विदेशी धरती पर, पराधीन रहते हुए भी बलिदान की जिस गाथा का निर्माण किया, वह गर्व करने योग्य है।

पर शायद हम लोगों को यह पता ही नहीं है, कुसूर आपका नहीं है।

हमें वामपंथियों द्वारा लिवा झूठा इतिहास पढ़ाया गया है, किंतु, अब यह जानकारी सभी तक पहुंचनी चाहिए। ❐ *(साभार : सोशल मीडिया)*

गुरुओं के पंजाब को कौन छोटा बना रहा है?

गुरु गोबिंद सिंह जी का जन्म पटना (बिहार) में हुआ और वह ज्योति जोत समाये नांदेड़ महाराष्ट्र में। उनकी कोई भी रचना पंजाबी में नहीं है। पंजाब का अर्थ है पांच नदियों वाला लेकिन 1947 में भारत के विभाजन के बाद दो नदियां पाकिस्तान रह गयीं अब भारत वाले पंजाब में केवल 3 नदियां हैं।

1966 में भारतीय पंजाब का विभाजन फिर से हो गया और परिणामस्वरूप हरियाणा और हिमाचल प्रदेश पंजाब से फिर अलग हो गए। आप को आश्चर्य होगा कि पंजाब को हिमाचल और हरियाणा को अलग करने के लिए अकाली नेता मास्टर तारा सिंह ने आमरण अनशन किया और पंजाब का वर्तमान सिव बहुल्य राज बना।

इस पंजाब में न तो ननकाना साहिब है, न पंजा साहब है और न ही करतारपुर साहब है, अगर अकाली क्रीप्स मिशन में प्रयास करते तो भारत सीमा से केवल 4 किलोमीटर दूर करतारपुर साहब भारत में होता। क्रीप्स आयोग ने ऐसे कई स्थान पाकिस्तान को दिए जिसमें लाहौर भी था, जहां हिन्दू सिवों का बाहुल्य था। ❐

शाहिद सब्जीवाला

■ आचार्य मायाराम पतंग

शाहिद सब्जी बेचता है। तीसरा निकाह कर चुका है और 14 बच्चों का बाप है। अब उसके खानदान में 56 लोग हैं। उसका कहना है कि भारत में इस्लामी राज लाने के लिए वह अपनी जनसंख्या बढ़ा रहा है। उसकी और बातों को जानने के लिए यह लेख अवश्य पढ़ें...

हमारी गली में सब्जी वाले तो अनेक आते हैं परन्तु इसकी कुछ विशेषताएं हैं। लम्बी दाढ़ी, सिर पर टोपी, लम्बा सा कुर्ता कन्धे पर चार खाने का गमछा सदा डाले रहता है। वैसे तो हमारे क्षेत्र में नब्बे प्रतिशत सब्जी वाले ऐसे ही लिवास में होते हैं परन्तु इसकी बोलचाल बहुत बेबाक है। सभी महिलाओं से बहुत अपनेपन से बात करता है। बेटी शब्द तो उसकी जुबान पर चढ़ा हुआ है। एक बड़ी विशेषता उसकी यह है कि वह मौसम के हिसाब से सब्जी लाता है। सब तरह की सब्जी नहीं लाता। मुश्किल से दो या तीन उसका रेट भी ओरों से सस्ता होता है। मानो तोरी, घीया, भिण्डी लाया। अन्य सब्जी वाले भिण्डी दस रु. पाव देंगे तो वह दस रु. की आधा किलो। उसकी सब्जी कई बार बासी हो सकती है, खराब हो सकती है परन्तु मंहगी नहीं।

मुझे तो लिहाज में औरों से भी सस्ती दे जाता है। वैसे तो उससे पहचान काफी पुरानी है परन्तु पहले कभी खुलकर बातचीत का अवसर ही नहीं मिला। जब मैं जाफराबाद में शिक्षक था तब वह अपने एक पुत्र को छठी में प्रवेश दिलाने आया था। उससे दो बड़े बेटे सातवीं और आठवीं में पढ़ते थे। फिर मैं ब्रह्मपुरी के सर्वोदय में स्थानान्तरित हो गया तो वहां 12 न. गली में ठेला लगाए मिल जाता। अब मैं सेवानिवृत्त होकर घर ही रहता हूं तो वह सब्जी बेचने हमारी गली में आता है। शायद वह शिक्षक होने के नाते मेरा आदर करता है।

जी जनाब! जाफराबाद में ही घर था जनता मजदूर कालोनी में पचास गज जमीन घेर ली थी। पहले झुग्गी डाली। फिर आगजनी में बहुत सी झुग्गियां जल गईं तो सरकार ने जो रकम दी तो झुग्गियों की जगह मकान बन गए। सर मेरा तो तीन ही मंजिल है। कई लोगों ने तो चार पांच मंजिल के मकान खड़े कर लिए।

अब वह ठेला नहीं रिक्शा पर सब्जी बेचता है। उस दिन मेरे पास एक मित्र खड़े थे। तभी सब्जीवाला आ गया। पालक, मेथी और सरसों का साग लाया था। साग लाता है तो हमारे घर तक आवाज लगाने अवश्य आता है क्योंकि उसे पता है मुझे साग खाना पसन्द है। मेरे पास जो मित्र खड़े थे उन्होंने कहा– आप इससे साग मत खरीदा करो। वह सस्ते के चक्कर में ताजी सब्जी नहीं लाता। मैंने कहा बन्धु यह पुराना परिचित है। यह मेरा लिहाज करता है और मैं इससे सब्जी खरीदकर इसका मान रखता हूं। मित्र ने पूछा– आप इससे कितने परिचित हैं? इसका नाम, गांव, परिवार काफी कुछ पता है? मैंने कहा ठीक कहा आपने? मुझे तो केवल इतना ही पता है कि गत पच्चीस वर्ष से यह सब्जी बेचता है। औरों से सस्ती भी दे जाता है। इससे आगे कभी जानने की जरूरत भी नहीं समझी। मित्र ने कहा आतंकवादी भी हो सकता है। गली वाले तो कह देंगे कि आपकी जान पहचान थी आप उसे जानते हैं। फिर क्या बतायेंगे?

मित्र तो चले गए परन्तु मैंने सोचा--आतंकवादी तो नहीं हो सकता। परन्तु फिर भी परिचय पूछने में क्या हर्ज है? अगले दिन वह मूली और शलगम लाया। मैंने

उसे शलगम खरीदते हुए कहा अरे मियां कभी ठहर कर बातचीत भी कर लिया करो। सारे दिन यूं ही भागते रहते हो।

वह बोला– नहीं जनाब! मैं सारे दिन का किस्सा नहीं करता! नौ बजे से बारह बजे तक ही फेरी लगाता हूं। फिर जाकर खाना खाकर आराम करता हूं। मैंने पूछा घर कहां है आपका? और नाम तो कभी पूछा ही नहीं।

वह बोला, ''नाम मेरा शाहिद है। जनता कालोनी में खजूर वाली मस्जिद के पस घर है। किसी से भी पूछो शाहिद सब्जी वाला सब जानते हैं।'' मैंने कहा, ''शाहिद जी पहले आप जाफराबाद में भी रहते थे। जब मैं जाफराबाद के सरकारी स्कूल में ही पढ़ाता था।''

वह बोला, जी जनाब! जाफराबाद में ही घर था जनता मजदूर कालोनी में पचास गज जमीन घेर ली थी। पहले झुग्गी डाली। फिर आगजनी में बहुत सी झुग्गियां जल गईं तो सरकार ने जो रकम दी तो झुग्गियों की जगह मकान बन गए। सर मेरा तो तीन ही मंजिल है। कई लोगों ने तो चार पांच मंजिल के मकान खड़े कर लिए। मैंने और निकटता दिखाते हुए पूछा– फिर जाफराबाद वाले मकान का क्या हुआ? ''कुछ नहीं खुदा का करम है वहां भी अपने बच्चे ही रहते हैं।'' शाहिद जी आपके बच्चे कितने हैं?'' मैंने पूछा । शाहिद ने कहा, ''जनाब खुदा झूठ ना बुलवाएं अल्ला की मेहरबानी है कुल चौदह बच्चे हैं।'' मैंने आश्चर्य से आँखें फैलाते हुए कहा, ''आपकी बेगम जिन्दा हैं।'' वह बोला, ''हाँ, एक तो अभी जिन्दा है। दो मर चुकी, पहली से दो बेटी हुई तीन बेटे हुए थे। ओ मर गई तो दूसरी से सात बेटे हुए एक बेटी हुई। वह भी तीन साल पहले चली गई। अब औरत के बिना घर गृहस्थ का काम कैसे चले? तीसरी शादी करनी पड़ी।'' मैं बोला, ''वह तो जीवित है न।'' हाँ, हाँ वह तो अभी 22 साल की है। मेरे मरने के बाद भी खूब जियेगी। मैं बोला, ''इतने बच्चों के होते हुए आपने तीसरी शादी क्यों कर ली?''

शाहिद ने कहा, ''मास्टर जी! आप भी जानते हैं सब बेटे अपनी-अपनी बीवियों के साथ हैं। बुढ़ापे में मुझे कौन पूछता? अपनी बीवी हो तो किसी की सेवा की आशा नहीं।''

"तो सारा परिवार एक जगह रहता है?" शाहिद बोला, "जनाब! पहले हम रहते थे जमना बाजार। सरकार ने वहां से हटाए तो जगह मिली सीलमपुर। सीलमपुर में अस्सी गज जगह मिली थी। अच्छी सड़कें, बाजार, थाना डाकखाना, बस स्टैण्ड सब कुछ था। जमीन बेच दी। फिर चौहान वोकर की जमीन जाफराबाद की जगह में खाली पड़ी थी। वहीं सौ गज घेर ली। वो तो घेरी ही जानी थी। मैं नहीं घेरता तो कोई और घेर लेता। तो वो शुभ काम मैंने ही कर दिया। फिर बच्चे भी बड़े हो रहे थे, जगह तो चाहिए ही थी।" फिर जनता कालोनी कैसे आ गए? शाहिद ने बताया, "यह तो सीधी सी बात है। अपनी आँखें खोलकर तलाश करें तो पता लग ही जाता है। जब वेलकम कालोनी के पास बाग में कुछ प्लांट काटे गए और कुछ नेताओं की सिफारिश से अपने लोगों में बांट दिए गए तो बाग की जो जगह बची उसे लोगों ने घेर लिया। तभी मैंने भी पचास गज घेर ली। पहले तो झुग्गी डाली फिर मकान बना लिए। सड़क के पास खंभे से कटिया डालकर बिजली सारी बस्ती लेती है। पानी की लाइन सड़क से होकर जा ही रही है। आगे खुद अपने घर तक ले ली। और अब तो आप पार्टी की झाड़ू वाली सरकार है। झाड़ू पर वोट डालने के वायदे से जब मस्जिद के इमाम और सहायक को तनख्वाह मिल सकती है तो हम तो फिर भी अपनी मेहनत से करके खा रहे हैं।"

मैंने पूछा, "शाहिद मियां, परिवार में सब बेटे-बेटी साथ रहते हैं।" शाहिद बोला, "नहीं छोटा बेटा तो एक ही है जो मेरे पास रहता है। तीनों बेटियों का निकाह कर दिया था दस बेटों के भी निकाह हो चुके हैं। सब अपनी-अपनी बीवियों के साथ अलग रहते हैं। चार जाफराबाद वाले मकान में हैं, वह भी जनता कालोनी में ही डी ब्लॉक में जमीन घेर कर मकान बना लिए हैं।"

अच्छा! तो उन सबके भी बच्चे होंगे?

"हाँ, हाँ अल्ला के मेहर से फुलवारी खूब खिल रही है । चौदह से ..... और छप्पन पोते-पोती। कोई कमी नहीं खुदा का मेहर है।"

मैंने पूछा आपको सबके नाम याद हैं? शाहिद बोला, "मुझे तो अपने चौदह बच्चों के नाम भी सही से याद नहीं हैं। छप्पन तो मैं पिछले साल की बता रहा हूँ। किसी ना किसी के और हो गया होगा।" "कोरोना के समय में दो समय का खाना जुटाने में तो बड़ी परेशानी हुई होगी।" अजी कतई परेशानी नहीं हुई। कुछ वेलकम के स्कूल में लाईन में लगे। कुछ सुभाष पार्क के स्कूल में लाइन में लगे। पका पकाया खाना भी लाए और राशन भी लाए। श्रीराम मंदिर वेलकम में सेवा भारती ने खूब राशन बांटा। वैसे तो वहां केवल हिन्दू ही लेने जा रहे थे परन्तु कोई मुसलमान भी चला जाए तो बेचारे दे ही देते थे। वहां से भी लिया। इतना जमा कर लिया अब तक खा रहे हैं।"

मैं बोला, "तो शाहिद मियां! आप तो खूब मजे में हैं? कोई परेशानी नहीं।" शाहिद बोला, "जब हमारे पूर्वज हिन्दुस्तान पर सात सौ साल राज करते रहे। आजादी आई तो राज वापस मुसलमानों को ही मिलना चाहिए था। अब ये जम्हूरियत आ गई। फैसला तलवार, बंदूक से नहीं वोटों से होता है। अपना राज लेना ही है। बहुमत का इन्तजार करना पड़ेगा। अगले पच्चीस साल में हम अपनी संख्या बढ़ा लेंगे। जब बहुमत से सरकार बन जाएगी तो फिर संविधान बदल कर इस्लामी राज्य बन जाएगा।"

उसकी बातें सुनकर फटी रह गई मेरी आंखें। मैं बोला, शाहिद मियां! आप तब तक जीते रहेंगे क्या? शाहिद बोला, "मेरे जीने ना जीने से क्या होता है? हमारी कुरआन का हुक्म है। इस्लाम के मानने वालों के अलावा और सब काफिर हैं। उन्हें बन्दूक से तलवार से, प्यार से तकरार से जैसे भी मार सकें मारो और इस्लाम को फैलाओ जिनमें तसल्ली नहीं जल्दबाज है वो कुरआन का हुक्म मान कर आतंकवादी बन जाते हैं। जिन्हें खुदा के फजल पर पूरा भरोसा है वे तसल्ली से अपनी संख्या बढ़ा रहे हैं। उन्हें भरोसा है एक दिन राज हमारा होगा ।" इतना कहकर शाहिद आगे बढ़ गया। ❐

जब सीता ने राम-लक्ष्मण को डांट पिलाई

■ बिपिन किशोर सिन्हा

सामान्यत: सीता प्रभु श्रीराम के किसी निर्णय पर असहमति नहीं प्रकट करती थीं और सदैव शान्त रहकर उन पर विश्वास करती थीं, लेकिन एक दिन उनके धैर्य का बांध टूट ही गया।

दस वर्ष के अपने दण्कारण्य के प्रवास में दोनों भ्राता नित्य ही आततायी राक्षसों के आवेट में निकलते। जो भी राक्षस ऋषियों के यज्ञ में विघ्न डालता या कष्ट पहुँचाता दिवाई पड़ता, उसका वध कर देते। असंख्य राक्षसों का संहार किया दोनों भ्राताओं ने। दण्डकारण्य में शान्ति लौट आई थी। समस्त ऋषि-मुनि तपस्या, साधना एवं व्रत का पूर्व की भांति निर्भय होकर अनुष्ठान करने लगे। लेकिन सीता इस हिंसा से प्रसन्न नहीं थीं। एक दिन स्पष्ट स्वर में उन्होंने डांटा, आर्यपुत्रद्वय! यद्यपि आपलोग महान पुरुष हैं,

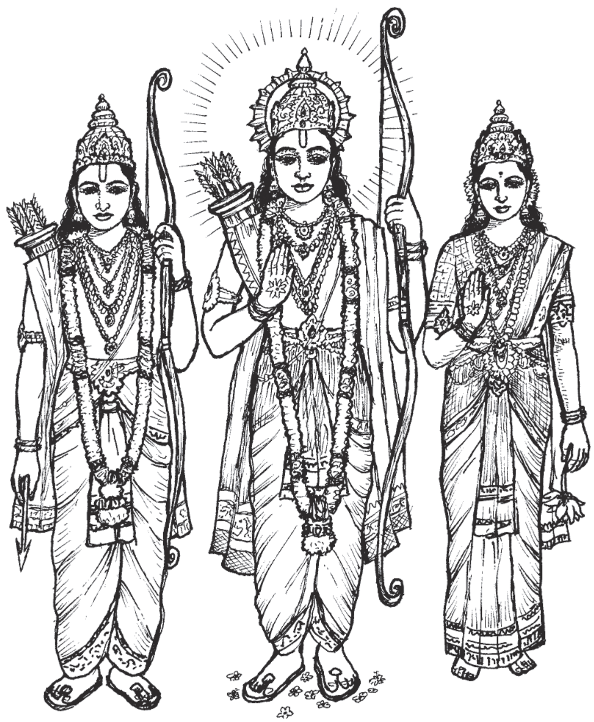

तथापि अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने पर मुझे प्रतीत हो रहा है कि आप दोनों अधर्म को प्राप्त हो रहे हैं। इस जगत में पुरुषों में तीन व्यसन प्राय: पाये जाते हैं- मिथ्या भाषण, पर स्त्रीगमन और अनावश्यक हिंसा। आप लोग जितेन्द्रिय हैं, सदा सत्य और धर्म को पूर्ण रूप से धारण करते हैं, अत: प्रथम दो व्यसन आप लोगों के समीप आ ही नहीं सकते। लेकिन आप दोनों भ्राता हाथ में धनुष-बाण लेकर नित्य ही राक्षसों के आवेट पर निकल जाते हैं, यह मुझे अच्छा नहीं लगता। उन्होंने आपका क्या बिगाड़ा है? आपसे उनकी कोई शत्रुता भी नहीं है। फिर भी आप दोनों अनावश्यक हिंसा क्यों करते हैं? वन में आये हैं तो वनवासी की तरह रहिए। प्रतिदिन शुद्धचित्त होकर यज्ञ-हवन-धर्म का अनुष्ठान करिए।''

लक्ष्मण तो चुप रहे परन्तु श्रीराम मुस्कुराये और सीता से बोले, शुभे! दण्डकारण्य में रहने वाले तपस्वी धर्मपारायण ऋषि-मुनि मेरे शरणागत हैं। शरणागत की रक्षा करना मेरा धर्म है। ये क्रूरकर्मी मांसाहारी राक्षस उन्हें मारकर वा जाते हैं। उनके धार्मिक अनुष्ठानों में बाधा डालते हैं। धर्म की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति देना एक क्षत्रिय का प्रथम कर्त्तव्य होता है। राक्षसों की हिंसा का उत्तर अहिंसा और तपस्या से देते-देते असंख्य ऋषि-मुनि काल के ग्रास बन गए। वह सामने जो पर्वत दिवाई पड़ रहा है, वह और कुछ नहीं, ऋषि-मुनियों का अस्थिपुंज है। सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने वालों की रक्षा करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है। मैं वही कर रहा हूँ, प्रिये। तुम आश्वस्त हो वो- तुम्हारा राम और मेरा अनुज लक्ष्मण स्वप्न में भी अधर्म का आचरण नहीं कर सकते।''

माता सीता का क्रोध शान्त हो चुका था। वे अपनी शंका का समाधान पा चुकी थीं। ❐

(संदर्भ : वाल्मीकि रामायण, अरण्य काण्ड, फेसबुक से साभार)

सिंदूर का मर्म समझिए

■ डॉ. कल्पना दीक्षित

इधर कुछ दिनों से अपने को प्रगतिशील कहने वाली और सदैव भारतीय संस्कृति पर चोट करने वालीं कुछ महिलाओं ने विवाहित महिलाओं को सिंदूर न लगाने की सलाह दी है। उनका कहना है कि सिंदूर लगाने की अनिवार्यता समाप्त होनी चाहिए। इसका विरोध भी महिलाएँ ही कर रही हैं। एक ऐसी ही महिला हैं कोलकाता के जाधवपुर विश्वविद्यालय में प्रोफेसर डॉ कल्पना दीक्षित। इन्होंने सिंदूर पर एक बहुत ही मार्मिक लेख लिखा है, जिसे सोशल मीडिया से लिया गया है।

सिंदूर वह प्रतीक है जिसमें अमूर्त सौभाग्य की अथाह भावनाएँ निहित हैं! सिंदूर द्वैताद्वैत जैसी दार्शनिक अवधारणा का प्रत्यक्षीकरण है। कामविकार सिंदूर के रंग में दग्ध होकर वंदनीय पुरुषार्थ बन जाता है। सिंदूर की आकांक्षा में और सिंदूर के आश्रय में केलि-क्रीड़ा व्यभिचार-मुक्त हो जाती है। सिंदूर वह संस्कृति है जो हजारों साल की राजनीतिक उथल-पुथल के बाद भी अक्षुण्ण है। सिंदूर के आश्रय में सामाजिक व्यवस्था की संरचना बनती है। मानव पाशविकता से भिन्न रहकर समाज को श्रेयस की ओर ले जाता है। अब दूसरी बातें जिस संस्कृति में सिंदूर की व्यवस्था नहीं है, वहाँ सफलता अर्जित करने का कारण सिंदूर न लगाना मात्र नहीं है, अपितु सजग जागरूकता है। सिंदूर न लगाने वाले समुदाय में भी महिलाएँ पिछड़ी पाई जाती हैं। सिंदूर न लगाने से देश की जीडीपी पर फर्क नहीं पड़ने वाला। सिंदूर के आश्रय या विरोध में विमर्श दर्ज करना, स्वतंत्र चेतना का सूचक नहीं। हिन्दू धर्म की अधिकांश महिलाएँ वर्तमान में नियमित सिंदूर लगाने के प्रति दृढ़ नहीं हैं, फिर भी उनकी जिंदगी में बहुत कुछ उपलब्ध नहीं हो सका है। अब आप कहेंगी कि पुरुषों को इस सौभाग्य से वंचित क्यों किया गया, तो माते! हनुमान जी ने पूरे शरीर में सिंदूर ही पोत रखा है। यदि आपकी अंजनिपुत्र में आस्था डगमग है, तो किसी भी विवाहित पुरुष को ढंग से निहारिएगा, उसके पोर-पोर में पत्नी का रंग दिखेगा। जन्मदात्री के बाद पत्नी ही हाँड़-मांस का पोषण करती है, लेकिन सम्बन्धों का सौंदर्य आप न बूझ सकेंगी। कभी किसी प्रेयसी की आँखों को पढ़िएगा, आपको सिंदूर का रंग ही दिखेगा। मीरा और महादेवी की कविताओं के उज्ज्वल रंग में समाहित सिंदूरी सुनहलेपन को देखना सबके बस का नहीं। बहुत सारी बातें हैं करने को। जंगली स्वतंत्रता के नाम पर मुक्त रहने वाले स्त्री-पुरुष में निष्ठा पाने की जो भूख होती है न वही सिंदूर के रंग का मर्म है। सिंदूर लगाने की अनिवार्यता को हम नहीं लागू करना चाहते, लेकिन आप सिंदूर हटाने की अनिवार्यता को क्यों चाहती हैं। हम महानगर में रहकर अपनी मर्जी से पियरके सेंदुर से मांग भरते हैं... मुझे अच्छा लगता है.... मेरी अभिरुचि है.... बाध्यता नहीं। सिंदूर की रोशनी में ही हम खुद को गृहस्वामिनी सिद्ध किए रहते हैं। सांस्कृतिक यात्रा में विसंगतियाँ आई हैं। उस चूक को समझकर आगे की दिशा तय करने के बदले, सिंदूर हटाने की पैरवी कहीं विमर्श को कोल्हू का बैल न बना दे। कोई भी महिला सिंदूर न लगाने के लिए स्वतंत्र हो सकती है, लेकिन अन्य महिलाओं को सिंदूर लगाने से रोकना, गुमराह करना, स्मार्ट-जीवन के लिए शोभित नहीं है। सिंदूर लगाने या न लगाने में उलझने की जगह सिंदूर के मर्म को समझिए मन महक उठेगा आपका। कभी उस महिला को देखिए, जिसका धन-वैभव-श्रृंगार-आभूषण सब कुछ सिंदूर ही है। वह अमीरी आपको न बुझाएगी अकिल में प्रेम का अंजोर करिए..... सिंदूर नहीं खटकेगा कभी। सिंदूर में आत्मसम्मान... स्वाभिमान... ही नहीं.... आधिपत्य का गौरव भी निहित है....!

कुछ भूल-चूक हो तो माफ करिएगा। इसी सिंदूर के सामने तो खुला आकाश भी संकुचित हो जाता है। पांच रुपए की डिब्बी बहुत कीमती होती है मैडम...! ❑

संतान के रूप में कौन आता है

■ अविनाश पारिख

यह बात तो तय है कि पूर्व जन्म के कर्मों से ही हमें इस जन्म में माता-पिता, भाई-बहिन, पति-पत्नी, प्रेमिका, मित्र-शत्रु, सगे-संबंधी इत्यादि संसार के जितने भी रिश्ते नाते हैं, सब मिलते हैं। क्योंकि इन सबको हमें या तो कुछ देना होता है, या इनसे कुछ लेना होता है।

वैसे ही संतान के रूप में हमारा कोई पूर्व जन्म का 'सम्बन्धी' ही आकर जन्म लेता है। इसे शास्त्रों में चार प्रकार का बताया गया है-

1. ऋणानुबन्ध : पूर्व जन्म का कोई ऐसा जीव जिससे आपने ऋण लिया हो या उसका किसी भी प्रकार से धन नष्ट किया हो, तो वो आपके घर में संतान बनकर जन्म लेगा और आपका धन बीमारी में या व्यर्थ के कार्यो में तब तक नष्ट करेगा जब तक उसका हिसाब पूरा ना हो।

2. शत्रु पुत्र : पूर्व जन्म का कोई दुश्मन आपसे बदला लेने के लिये आपके घर में संतान बनकर आयेगा और बड़ा होने पर माता-पिता से मारपीट, झगड़ा, या उन्हें सारी जिन्दगी किसी भी प्रकार से सताता ही रहेगा। हमेशा कड़वा बोल कर उनकी बेइज्जती करेगा व उन्हें दु:खी रखकर खुश होगा।

3. उदासीन पुत्र : इस प्रकार की 'सन्तान', न तो माता-पिता की सेवा करती है, ओर ना ही कोई सुख देती है, और उनको उनके हाल पर मरने के लिए छोड़ देती है। विवाह होने पर यह माता-पिता से अलग हो जाते हैं।

4. सेवक पुत्र : पूर्व जन्म में यदि आपने किसी की खूब सेवा की है, तो वह अपनी की हुई सेवा का ऋण उतारने के लिये, आपकी सेवा करने के लिये पुत्र बन कर आता है।

जो बोया है, वही तो काटोगे। अपने माँ-बाप की सेवा की है, तो ही आपकी औलाद बुढ़ापे में आपकी सेवा करेगी, वरना कोई पानी पिलाने वाला भी पास ना होगा। आप यह ना समझें कि यह सब बातें केवल मनुष्य पर ही लागू होती हैं।

इन चार प्रकार में कोई सा भी जीव आ सकता है। जैसे आपने किसी गाय की नि:स्वार्थ भाव से सेवा की है तो वह भी पुत्र या पुत्री बनकर आ सकती है।

यदि आपने गाय को स्वार्थवश पालकर उसके दूध देना बन्द करने के पश्चात् उसे घर से निकाल दिया हो तो वह ऋणानुबन्ध पुत्र या पुत्री बनकर जन्म लेगी।

यदि आपने किसी निरपराध जीव को सताया है तो वह आपके जीवन में शत्रु बनकर आयेगा। इसलिये जीवन में कभी किसी का बुरा न करें। क्योंकि प्रकृति का नियम है कि आप जो भी करोगे, उसे वह आपको इस जन्म या अगले जन्म में, सौ गुना करके देगी।

यदि आपने किसी निरपराध जीव को सताया है तो वह आपके जीवन में शत्रु बनकर आयेगा। इसलिये जीवन में कभी किसी का बुरा न करें। क्योंकि प्रकृति का नियम है कि आप जो भी करोगे, उसे वह आपको इस जन्म या अगले जन्म में, सौ गुना करके देगी। यदि आपने किसी को एक रुपया दिया है, तो समझो आपके खाते में 100 रु. जमा हो गये हैं। यदि आपने किसी का एक रुपया छीना है, तो समझो आपकी जमा राशि से 100 रु. निकल गये।

जरा सोचो.. आप कौन सा धन साथ लेकर आये थे, और कितना साथ लेकर जाओगे..? जो चले गये, वो कितना सोना-चाँदी साथ ले गये..? मरने पर जो सोना-चाँदी, धन-दौलत, बैंक में पड़ा रह गया, समझो.. वो व्यर्थ ही कमाया..?? औलाद अगर अच्छी और लायक है, तो उसके लिये कुछ भी छोड़ कर जाने की जरूरत नहीं, खुद ही खा-कमा लेगी, और अगर बिगड़ी और नालायक औलाद है, तो उसके लिए जितना मर्जी धन छोड़ कर जाओ, वह चंद दिनों में सब बरबाद करके ही चैन लेगी।

मैं, मेरा-तेरा, सारा धन यहीं का यहीं धरा रह जाना है, कुछ भी साथ नहीं जाना है, साथ सिर्फ नेकियाँ ही जाएंगीं। ❐

भारतीयता का विरोधी है बॉलीवुड

■ प्रो. धीरज शर्मा

अक्सर कहा जाता है कि बॉलीवुड की फिल्में हिंदू और सिख धर्म के खिलाफ लोगों के दिमाग में धीमा जहर भर रही हैं। इसकी सच्चाई जानने के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट (आईआईएम) रोहतक के निदेशक प्रो. धीरज शर्मा ने एक अध्ययन किया है। हालांकि उनका यह अध्ययन कुछ साल पुराना है। तब वे आईआईएम, अमदाबाद में प्रोफेसर थे। लेकिन उनका यह अध्ययन आज भी उतना ही प्रसांगिक है, जितना उस समय था। इसलिए उनके इस अध्ययन की मुख्य बातों को यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।

मैंने बीते छह दशक की 50 बड़ी फिल्मों की कहानी को अपने अध्ययन में शामिल किया और पाया कि बॉलीवुड एक सोची-समझी रणनीति के तहत बीते करीब 50 साल से लोगों के दिमाग में यह बात भर रहा है कि हिंदू और सिख दकियानूसी होते हैं। उनकी धार्मिक परंपराएं बेतुकी होती हैं। मुसलमान हमेशा नेक और उसूलों पर चलने वाले होते हैं। जबकि ईसाई नाम वाली लड़कियां बदचलन होती हैं। हिंदुओं में कथित ऊंची जातियां ही नहीं, पिछड़ी जातियों के लिए भी रवैया नकारात्मक ही है।

ब्राह्मण नेता भ्रष्ट, वैश्य बेइमान कारोबारी!

आईआईएम के इस अध्ययन के अनुसार फिल्मों में 58 फीसदी भ्रष्ट नेताओं को ब्राह्मण दिखाया गया है। 62 फीसदी फिल्मों में बेइमान कारोबारी को वैश्य सरनेम वाला दिखाया गया है। फिल्मों में 74 फीसदी सिख किरदार मजाक का पात्र बनाया गया। जब किसी महिला को बदचलन दिखाने की बात आती है तो 78 फीसदी बार उनके नाम ईसाई वाले होते हैं। 84 प्रतिशत फिल्मों में मुस्लिम किरदारों को मजहब में पक्का यकीन रखने वाला, बेहद ईमानदार दिखाया गया है। यहां तक कि अगर कोई मुसलमान खलनायक हो तो वो भी उसूलों का पक्का होता है। हैरानी इस बात की है कि यह लंबे समय से चल रहा है और अलग-अलग समय की फिल्मों में इस संदेश को बड़ी सफाई से फिल्मी कहानियों के साथ बुना जाता है।

बजरंगी भाईजान देखने के बाद अध्ययन

मैं बहुत कम फिल्में देखता हूं। लेकिन कुछ दिन पहले किसी के साथ मैंने बजरंगी भाईजान फिल्म देखी। मैं हैरान था कि भारत में बनी इस फिल्म में ज्यादातर भारतीयों को तंग सोच वाला, दकियानूसी और भेदभाव करने वाला दिखाया गया है। जबकि आम तौर पर ज्यादातर पाकिस्तानी खुले दिमाग के और इंसान के बीच में फर्क नहीं करने वाले दिखाए गए हैं। यही देखकर मैंने तथ्यात्मक अध्ययन करने का फैसला किया।

पाकिस्तान और इस्लाम का महिमामंडन

मेरी टीम ने 20 ऐसी फिल्मों को भी अध्ययन में शामिल किया जो पिछले कुछ साल में पाकिस्तान में भी रिलीज की गईं। इनमें से 18 में पाकिस्तानी लोगों को खुले दिल और दिमाग वाला, बहुत सलीके से बात करने वाला और हिम्मतवाला दिखाया गया है। सिर्फ पाकिस्तान की सरकार को इसमें कट्टरपंथी और तंग नजरिए वाला दिखाया जाता है। पाकिस्तान में रिलीज हुई ज्यादातर फिल्मों में भारतीय अधिकारी अड़ंगेबाजी करने वाले और जनता की भावनाओं को नहीं समझने वाले दिखाए जाते हैं। फिल्मों के जरिए छवि बनाने-बिगाड़ने का यह खेल 1970 के दशक के बाद से तेजी से बढ़ा है। जबकि पिछले एक दशक में यह काम सबसे ज्यादा किया गया है। 1970 के दशक के बाद ही फिल्मों में सलीम-जावेद जैसे लेखकों का असर बढ़ा, जबकि मौजूदा दशक में सलमान, आमिर और शाहरुख जैसे खान हीरो सक्रिय रूप से अपनी फिल्मों में पाकिस्तान और इस्लाम के लिए सहानुभूति पैदा करने वाली बातें डलवा रहे हैं।

यह माना जा सकता है कि फिल्म वाले पाकिस्तान, अरब देशों, यूरोप और अमेरिका में फैले भारतीय और पाकिस्तानी समुदाय को खुश करने की नीयत से ऐसी फिल्में बना रहे हों। लेकिन यह कहां तक उचित है कि इसके लिए हिंदुओं, सिखों और ईसाइयों को गलत रोशनी में दिखाया जाए?

वैसे भी इस्लाम को हिंदी फिल्मों में जिस सकारात्मक रूप से दिखाया जाता है, वास्तविक दुनिया में उसकी छवि इससे बिल्कुल अलग है। आतंकवाद की ज्यादातर घटनाओं में मुसलमान शामिल होते हैं, लेकिन फिल्मों में ज्यादातर आतंकवादी के तौर पर हिंदुओं को दिखाया जाता है। जैसे कि शाहरुख खान की 'मैं हूं ना' में सुनील शेट्टी एक आतंकी संगठन का मुखिया बना है जो नाम से हिंदू है।'

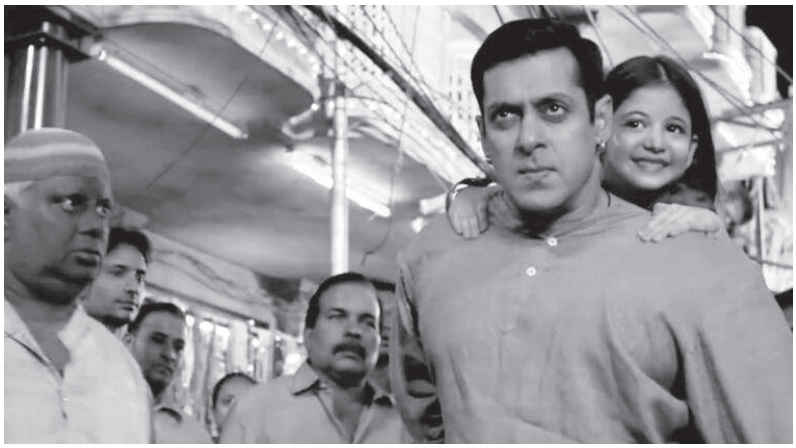

सलीम-जावेद की लिखी फिल्मों में हिंदू धर्म को अपमानित करने की कोशिश सबसे ज्यादा दिखाई देती है। इसमें अक्सर अपराधियों का महिमामंडन किया जाता है। पंडित को धूर्त, ठाकुर को जालिम, बनिए को सूदखोर, सरदार को मूर्ख कॉमेडियन आदि ही दिखाया जाता है। ज्यादातर हिंदू किरदारों की जातीय पहचान पर अच्छा खासा जोर दिया जाता है। इनमें अक्सर बहुत चालाकी से हिंदू परंपराओं को दकियानूसी बताया जाता है। इस जोड़ी की लिखी तकरीबन हर फिल्म में एक मुसलमान किरदार जरूर होता था जो बेहद नेकदिल इंसान और अल्ला का बंदा होता था। इसी तरह ईसाई पंथ के लोग भी ज्यादातर अच्छे लोग होते थे।

सलीम-जावेद की फिल्मों में मंदिर और भगवान

का मजाक आम बात थी। मंदिर का पुजारी ज्यादातर लालची, ठग और बलात्कारी किस्म का ही होता था। फिल्म शोले" में धर्मेंद्र भगवान शिव की आड़ लेकर हेमा मालिनी को अपने प्रेमजाल में फँसाना चाहते हैं, जो यह साबित करता है कि मंदिर में लोग लड़कियाँ छेड़ने जाते हैं। इसी फिल्म में एके हंगल इतना पक्का नमाजी है कि बेटे की लाश को छोड़कर, यह कहकर नमाज पढ़ने चल देता है कि उसने और बेटे क्यों नहीं दिए कुर्बान होने के लिए।

दीवार फिल्म में अमिताभ बच्चन नास्तिक हैं और वो भगवान का प्रसाद तक नहीं खाना चाहते हैं, लेकिन 786 लिखे हुए बिल्ले को हमेशा अपनी जेब में रखते हैं और वह बिल्ला ही बार-बार अमिताभ बच्चन की जान बचाता है। फिल्म जंजीर" में भी अमिताभ बच्चन नास्तिक हैं और जया, भगवान से नाराज होकर गाना गाती हैं, लेकिन शेरखान एक सच्चा मुसलमान है। फिल्म 'शान' में अमिताभ बच्चन और शशि कपूर साधु के वेश में जनता को ठगते हैं, लेकिन इसी फिल्म में 'अब्दुल' एक ऐसा सच्चा इंसान है जो सच्चाई के लिए जान दे देता है। फिल्म 'क्रान्ति' में माता का भजन करने वाला राजा (प्रदीप कुमार) गद्दार है और करीम खान (शत्रुघ्न सिन्हा) एक महान देशभक्त, जो देश के लिए अपनी जान दे देता है। 'अमर-अकबर-एंथोनी' में तीनों बच्चों का बाप किशनलाल एक खूनी स्मगलर है लेकिन उनके बच्चों (अकबर और एंथोनी) को पालने वाले मुस्लिम और ईसाई बेहद नेकदिल इंसान है। कुल मिलाकर आपको सलीम-जावेद की फिल्मों में हिंदू नास्तिक मिलेगा या फिर धर्म का उपहास करने वाला। जबकि मुसलमान शेर खान पठान, डीएसपी डिसूजा, अब्दुल, पादरी, माइकल, डेविड जैसे आदर्श चरित्र देखने को मिलेंगे।

हो सकता है आपने पहले कभी इस पर ध्यान न दिया हो, लेकिन अबकी बार जरा गौर से देखिएगा केवल 'सलीम-जावेद' की ही नहीं, बल्कि कादर खान, कैफी आजमी, महेश भट्ट जैसे ढेरों कलाकारों की कहानियों का भी यही हाल है। 'सलीम-जावेद' के दौर में फिल्म इंडस्ट्री पर दाऊद इब्राहिम का नियंत्रण काफी मजबूत हो चुका था। हम आपको बता दें कि सलीम खान सलमान खान के पिता हैं, जबकि जावेद अख्तर आजकल सबसे बड़े सेकुलर का चोला ओढ़े हुए हैं।

अब तीनों खान ने संभाली जिम्मेदारी

मौजूदा समय में तीनों खान एक्टर फिल्मों में हिंदू किरदार करते हुए हिंदुओं के खिलाफ माहौल बनाने में जुटे हैं। इनमें सबसे खतरनाक कोई है तो वो है आमिर खान। आमिर खान की पिछली कई फिल्मों को गौर से देखें तो आप पाएंगे कि सभी का संदेश यही है कि भगवान की पूजा करने वाले धार्मिक लोग हास्यास्पद होते हैं। इन सभी में एक मुस्लिम किरदार जरूर होता है जो बहुत ही भला इंसान होता है। पीके" में उन्होंने सभी हिंदू देवी-देवताओं को रॉन्ग नंबर बता दिया, लेकिन अल्लाह पर वो चुप रहे।

पहलवानों की जिंदगी पर बनी दंगल" में हनुमान की तस्वीर तक नहीं मिलेगी, जबकि इसमें पहलवानों को मांस खाने और एक कसाई का दिया प्रसाद खाने पर ही जीतते दिखाया गया है। सलमान खान भी इसी मिशन पर हैं, उन्होंने बजरंगी भाईजान" में हिंदुओं को दकियानूसी और पाकिस्तानियों को बड़े दिलवाला बताया। शाहरुख खान तो माई नेम इज खान" जैसी फिल्मों से काफी समय से इस्लामी जिहाद का काम जारी रखे हुए हैं।

संस्कृति को नुकसान की कोशिश

हॉलीवुड की फिल्में पूरी दुनिया में अमेरिकी संस्कृति, हावभाव और जीवनशैली को पहुंचा रही हैं, जबकि बॉलीवुड की फिल्में भारतीय संस्कृति से कोसों दूर हैं। इनमें संस्कृति की कुछ बातों जैसे कि त्योहार वगैरह को लिया तो जाता है लेकिन उनका इस्तेमाल भी गानों में किया जाता है। लगान जैसी कुछ फिल्मों में भजन वगैरह भी डाले जाते हैं लेकिन उनके साथ ही धर्म का एक ऐसा संदेश भी जोड़ दिया जाता है कि कुल मिलाकर नतीजा नकारात्मक ही होता है। ❐

चमत्कारी है तनोट माता का मन्दिर

■ रचना शास्त्री

भारत और पाकिस्तान की सीमा कश्मीर, पंजाब और राजस्थान में कई जगह मिलती है। राजस्थान के जैसलमेर क्षेत्र में भारतीय सीमा में लौंगेवाल पोस्ट के पास है तनोट माता का मन्दिर। यह एक स्थानीय देवी मन्दिर है। पौराणिक सिद्धपीठों में इसकी गणना नहीं होती, परन्तु अब इस मन्दिर का ऐतिहासिक महत्व भी जगजाहिर है।

17 नवम्बर, 1965 को पाकिस्तान की ओर से भारतीय सीमा पर आक्रमण किया गया। देवी स्वयं नहीं लड़ा करतीं पर जिन वीरों में आस्था होती है उनमें साहस और आत्मविश्वास का संचार किया करती हैं। आत्मविश्वास का भी आधार होता है। तनोट माता मन्दिर के प्रति भारतीय सीमा संगठन तथा भारतीय सेवा में आस्था का प्रत्यक्ष आधार विद्यमान है। यह चमत्कार सारे विश्व के धर्म धुरंधरों तथा विज्ञान वेत्ताओं के लिए प्रत्यक्ष प्रमाण है।

पाकिस्तानी फौज द्वारा आक्रमण तोप के गोलों तथा मिसाइलों से किया गया था। उस लौंगेवाल चौकी पर बी.एस.एफ. के गिनती के जवान थे। भारतीय सेना की भी साधारण बन्दूकधारी एक टुकड़ी थी। उन्होंने मंदिर की दीवार के निकट से ही आक्रमण का उत्तर देने की सोची। आगे बढ़ने लायक न संख्या थी, न हथियार। वहीं बने रहना उनकी मजबूरी थी। उन्होंने तनोट माता के मन्दिर में मन ही मन शरण ले ली। पाकिस्तान की ओर से 2500 से अधिक गोले मंदिर को लक्ष्य करके दागे गए। देवी की कृपा देखिए एक भी भारतीय जवान या भारतीय नागरिक के प्राणों की हानि नहीं हुई। इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह हुई कि लगभग 450 बम तथा गोले मंदिर परिसर में गिरे परन्तु एक भी नहीं फटा। किसी व्यक्ति को खरोंच तक नहीं आई। किसी दीवार या दरवाजे तक का नुकसान नहीं हुआ। कोई आस्था विरोधी कह सकता है कि यह मात्र संयोग है। यदि दो चार गोले बिना फटे रह जाते तो इसे संयोग मान सकते थे। साढ़े चार सौ गोलों तथा बमों का ना फटना तनोट माता मंदिर के प्रति उनकी शक्ति एवं चमत्कार के प्रति हमें नतमस्तक होने पर विवश कर देता है।

छह वर्ष पश्चात् 4 दिसम्बर, 1971 को पुनः माता ने अपनी कृपा से इस सीमा की सुरक्षा की। उस समय तो इस सीमा पर युद्ध की भनक तक नहीं थी। अचानक 13,000 की संख्या वाली टैंकों से सज्जित पाकिस्तानी सेना ने चौकी पर आक्रमण कर दिया। उस समय भी यहां बीएसफ के एक सौ बीस जवान थे। परन्तु न तो उन्होंने अपनी घबराहट दिखाई न अपनी कमी के कारण किसी को कोसा। पंजाब की सिख रेजीमेन्ट की टुकड़ी जान लगा कर भिड़ गई। वायु सेना का सहयोग मिलने में जरा भी विलम्ब नहीं हुआ। उनके टैंक तबाह कर दिए गए। आगे से तनोट माता मंदिर को सहारा बना कर फौज और बी.एस.एफ. मार कर रहे थे और ऊपर से भारतीय वायुसेना कहर ढा रही थी। इस भयानक युद्ध में पाकिस्तान अपने सैकड़ों जवान मरवा कर पीछे हट गया। एक बार फिर जनता और जवानों की आस्था तनोट माता मन्दिर के प्रति सुदृढ़ हो गई। ये सभी भारतीय जवान सुरक्षित रहे तथा मंदिर परिसर को भी तिल भर नुकसान नहीं हुआ।

अब तक भी 1965 के बम व गोले मंदिर में सुरक्षित रखे हुए हैं। उनमें से एक भी नहीं फटा। फिर भी यह मानना पड़ेगा कि माता पर भरोसा करके जवान पूरी शक्ति से दुश्मन से लड़े तो माता ने भी कृपा की। यदि केवल माता को मोर्चे पर खड़ा मान कर भाग जाते तो माता भी कुछ ना करती। ध्यान रहे भगवान और देवी-देवता भी उसी की रक्षा करते हैं जो अपनी रक्षा के लिए स्वयं साहसपूर्वक खड़ा होता है। ❐

ढाबे में 'नमाज पढ़ने की जगह'

■ प्रतिनिधि

नैनीताल से दिल्ली जाते हुए राष्ट्रीय राजमार्ग पर रास्ते में एक ढाबा पड़ता है। सुबह करीब 9 बजे हम 5 मित्र यहाँ नाश्ते के लिए रुके। तभी ढाबे में स्थित एक कमरेनुमा स्थान पर नजर पड़ी जिस पर लिवा था 'नमाज पढ़ने की जगह।' हम लोग ढाबा संचालक के पास पहुँचे और कहा कि हमें प्रात: काल की पूजा करनी है,,,कृपया बताएं कहाँ करें? वह कुछ असहज सा हो गया। उसने कहा, ''यह तो हमारे मैनेजर ही बता सकते हैं, वे अभी यहाँ नहीं हैं।'' वैर, नाश्ता सम्पन्न करके हम आगे बढ़ लिए। दो दिन बाद वापसी पर शाम को हम दोस्त फिर उसी ढाबे पर रुके और मैनेजर को ढूंढा। इस बार वे मिल गए। मैनेजर का नाम था हीरा सिंह। सौम्य व्यक्ति थे। हम सबसे गर्मजोशी के साथ मिले व हमारी बात भी सुनी। हमने उनसे कहा, ''हमें सायंकाल की पूजा-अर्चना करनी है। क्या हम लोगों के लिए भी कोई जगह आपने निर्धारित की है? जैसे नमाज पढ़ने के लिए कर रवी है?''

उन्होंने थोड़ी झेंप के साथ कहा, ''नहीं, आपके लिए ऐसी कोई जगह नहीं है।'' फिर सफाई देते हुए उन्होंने कहा, ''दरअसल, यह क्षेत्र मुस्लिम-बहुल है। इसलिए ग्राहकों को लुभाने हेतु हमें यह करना पड़ता है, क्योंकि बगल के उनके प्रतिद्वंद्वी ढाबे शिव यादव मामा और बाकी ढाबे वालों ने ये शुरुआत की थी। इसलिए हमें भी 'नमाज वाना' वोलना ही पड़ा। हम लोग तो सिर्फ नमाज के लिए ही जगह देते हैं। बाकी ढाबे वाले तो वाना भी हलाल के अनुसार ही बनाते हैं, क्योंकि हिन्दू का क्या है, वे तो कहीं भी वा लेते हैं कुछ भी वा लेते हैं।''

उन्होंने यह भी कहा, ''जहाँ तक हिन्दुओं की बात है पिछले 5 साल से मैं यह ढ़ाबा चला रहा हूँ। मुस्लिम तो पूछते हैं कि यहाँ हलाल का मिलता है कि नहीं, लेकिन आज तक किसी हिन्दू ने नहीं पूछा कि यहाँ हलाल का मिलता है या झटके का। मुस्लिमों को यकीन दिलाने के लिए लगभग सभी दाबे वालों ने अपने वानसामे भी मुस्लिम रवे हुए हैं।''

अर्थात् मुस्लिम तुष्टिकरण करना पड़ा। बहरहाल, हम लोग अपनी-पूजा अर्चना कहाँ करें, इसका उनके पास भी कोई जवाब नहीं था। यद्यपि उन्होंने हमारी बात पर संज्ञान लेते हुए हमें आश्वासन दिया कि ये बात वे इस ढाबे के मालिक तक पहुँचा देंगे।

यह एक वृतांत भर हो सकता है परंतु यदि हम अपने दैनिक जीवन में एक बात उतार लें कि हम जिस होटल में जाएंगे वहाँ पहले पूछेंगे कि यहाँ किसी प्रकार का हलाल का तो कोई वस्तु इस्तेमाल नहीं होती और अगर होती है तो हम उसका बहिष्कार करें। आपने देखा होगा आजकल दूध के पैकेट पर भी हलाल लिखा हुआ आता है! आखिर ऐसा क्यों हवाई अड्डे या होटल या अस्पतालों में 'प्रेयर रूम' के नाम पर 'नमाजगाह' होती है। आखिर पूजा घर क्यों नहीं हो सकता!

ढाबे से विदा लेते हुए मैं यही सोच रहा था कि राजनीति में वोट की वातिर और व्यापार में नोट की वातिर मुस्लिम तुष्टिकरण का कार्ड कैसे वेला जाता है। संगठित अल्प संख्यक समुदाय विशेष को बिना मांगे मिल रहा है, वहीं विघटित बहुसंख्यकों को मांगने पर भी नजरअंदाज कर दिया जाता है।

दिमाग की विड़कियाँ वोलो बेवकूफ हिन्दुओं देवो तुम्हारे अपने ही देश में तुम्हारे साथ क्या हो रहा है? यह एक वृतांत भर हो सकता है परंतु यदि हम अपने दैनिक जीवन में एक बात उतार लें कि हम जिस होटल में जाएंगे वहाँ पहले पूछेंगे कि यहाँ किसी प्रकार का हलाल का तो कोई वस्तु इस्तेमाल नहीं होती और अगर होती है तो हम उसका बहिष्कार करें। आपने देखा होगा आजकल दूध के पैकेट पर भी हलाल लिखा हुआ आता है! आखिर ऐसा क्यों हवाई अड्डे या होटल या अस्पतालों में 'प्रेयर रूम' के नाम पर 'नमाजगाह' होती है। आखिर पूजा घर क्यों नहीं हो सकता! यह सोचने का विषय है, जागने का विषय है, शीघ्र जागें, कहीं देर न हो जाए। ❐

(फेसबुक वॉल से साभार)

गृहस्थ का धर्म

■ स्वामी परमानन्द भारती

''मैं गृहस्थ हूं। मेरा धर्म क्या है?''

पारिवारिक जीवन का आनन्द लो। यह आनन्द आपके जीवन का गौण अंग हो न कि प्रधान। स्मरण रखिए? धर्माचरण से आपको सभी भौतिक सुखों की भी प्राप्ति हो जाएगी। कठिनाई के समय कर्म के सिद्धांत को याद रखते हुए उनका धैर्यपूर्वक सामना करना। कठोर परिश्रम करके नेकनीयति से धन अर्जित करना। शास्त्राज्ञा का पालन करते हुए अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान करना। धर्माचरण से कभी पथभ्रष्ट मत होना। दैनिक पूजा में कभी व्यतिक्रम न होने देना।

भगवान को भोग लगाये बिना कभी भोजन मत करना। भोजन संबंधी आदतों में अनुशासित रहना। दैनिक व्यायाम द्वारा निरोग रहना। अपने माता-पिता की सेवा करना और अपने आचरण से उन्हें प्रसन्न रखना। स्वाध्याय और उभयविध लौकिक और आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति में प्रमाद मत करना। अपनी संतान को भी इस ज्ञान का लाभ प्रदान करना। उन्हें अच्छे संस्कार देना। उनकी उपलब्धियों पर प्रशंसा करने की अपेक्षा केवल उनका आलिंगन कर आशीर्वाद दीजिए, इससे उनमें और अधिक प्राप्त करने की प्रेरणा का संचार होगा। प्रशंसा करने से वे अभिमानी हो जाएंगे और उनकी उन्नति अवरुद्ध हो जायेगी। आप यह मत सोचिए कि उनको लगातार भावी उज्ज्वल एवं समृद्धिशाली भविष्य संबंधी निर्देश देने से वे वैसे ही हो जाएंगे। उनके पूर्व कर्म ही उनके भौतिक सुख साधनों के निर्णायक हैं। आपका कर्तव्य केवल उनको अच्छे संस्कार देना है। जो समाज में अनादि काल से आज तक चले आ रहे हैं। अपनी पत्नी का आदर करते हुए उसे अपनी आनन्दानुभूति में सहयोगी बनायें। आप उसके साथ ही अपने धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न करें। दूसरी स्त्रियों से अधिक स्वतंत्रतापूर्वक व्यवहार न करते हुए उनसे एकान्त में सम्भाषण भी न करें। अपने वर्तमान स्वरूप के निर्माण में समाज के योगदान को याद रखें और उसके प्रति अपनी कृतज्ञता सक्रिय रूप से अभिव्यक्त करें।

''क्या शकाहारी भोजन आध्यात्मिक उन्नति के लिए अवश्यक है।''

समस्या यह है; 'जीव ही जीव का भोजन है', अर्थात् जीने के लिए हम चाहे जो भी भोजन लें उसमें जीव होता है। इससे बचा नहीं जा सकता। लेकिन आध्यात्मिक उन्नति के लिए दया भाव को विकसित करना आवश्यक है। सही अर्थो में यदि कहें तो जीने की इच्छा और दया भाव सिकसित करने में परस्पर विरोध है इसलिए सभी सभ्य समाज किसी न किसी स्तर पर समझौता करते हैं। कोई भी सभ्य समाज नर भक्षियों को सहन नहीं करता। उन्हें गोली मार दी जाती है। कुछ समाजों में घोड़ों का वध नहीं किया जाता क्योंकि वे खेत जोतने के काम आते हैं। नाविक ऐल्बट्रोस नामक एक समुद्री पक्षी का वध करने में परहेज करते हैं क्योंकि वे उनकी लम्बी यात्राओं में उनका मार्गदर्शन करते आये हैं। नाविकों की एल्बट्रोस के प्रति दया का कारण उसकी उपयोगिता प्रसूत कृतज्ञता है। हमारे देश में गाय और उसकी संतान का वध केवल इसलिए नहीं किया जाता क्योंकि उनका उपयोग कृषि कार्यो में होता है। गाय अपने दूध, दही, मक्खन तथा घी से हमारी जीवन पर्यन्त सेवा करती है। इसका मल (गोबर), मूत्र परमोपयोगी औषधि तथा शोधक है। यही कारण है कि हम इस पर न केवल दया, अपितु उससे प्यार करते हैं, उसकी पूजा करते हैं। हम अपने देश के अन्य मत-पंथों के लोगों से अपनी इन भावनाओं का आदर करने की प्रार्थना करते हैं। इसके अतिरिक्त शास्त्र हमें कुछ और दूसरे पशुओं जैसे कुत्ता, बिल्ली का मांस न खाने की शिक्षा देते हैं। कुछ लोग दया भाव प्रदर्शित करने में इससे भी आगे हैं। वे लोग केवल शाकाहारी भोजन ही लेते हैं, यह ठीक है इसमें भी जीवन होता है। लेकिन शास्त्रानुसार वनस्पति में केवल प्राण ही होते हैं, मन नहीं। यही कारण है कि इन्हें काटने और पकाने पर कष्ट नहीं होता है। कुछ लोग केवल दूध और फल ही लेते हैं। कुछ सन्त केवल जल ही ग्रहण करते हैं। इस प्रकार शास्त्र इस बात का निर्णय आप ही छोड़ता है कि आप किस स्तर के साथ समझौता करते हैं। ❐

सनातन संस्कृति की रक्षक

■ जगदंबा मल्ल

भारतवर्ष के सबसे पूर्वी छोर पर नागालैंड में जन्मीं रानी गाइदिनल्यू ने भारतीय धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए वह सब कुछ किया जो उन्हें सही लगा। रानी मां ने अंग्रेजों के द्वारा पोषित ईसाई मत का शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक स्तर पर जाकर प्रतिकार किया। रानी मां के द्वारा भारतीय परंपराओं की रक्षा के लिए अनेक प्रयास किए गए। रानी मां ने अपने कस्बे लंकाओं में सभी लोगों को सनातन धर्म एवं संस्कृति के प्रति लगातार जागृत करने का कार्य करती रहीं। इसीलिए आज भारतीय समाज रानी मां गाइदिनल्यू को माता अहिल्याबाई होलकर, माता कनग्गी, माता जीजाबाई एवं रानी लक्ष्मीबाई की श्रेणी में सम्मान के साथ स्थान प्रदान करता है।

जीवन परिचय- रानी गाइदिनल्यू का जन्म 26 जनवरी, 1915 को मणिपुर राज्य के छोटे से पहाड़ी कस्बे लंकाओं में हुआ था। रानी मां के पिता का नाम लोथोनांग व मां का नाम केलुवतलिनलयू था। रानी मां अपने माता मान्यता है कि रानी मां के जन्म से लगभग सप्ताह भर पहले लंकाओं में ऐसी प्राकृतिक छटा बन गई थी कि वहां का समस्त जनमानस किसी बहुत बड़ी अनहोनी की आंशका से डर गया था। आसमान में छाए काले-काले बादलों ने संपूर्ण लंकाओं को अंधकार के आगोश में ले लिया था। समस्त लंकाओं वासी दिन-रात ईश्वर से यही प्रार्थना करते थे कि किसी प्रकार से आया यह संकट टल जाए। पहाड़ों पर बादल फटने की घटना आम है। बादल फटने से कभी-कभी बहुत बड़ी दुर्घटना हो जाती है।

इसी भयानक वातावरण में रानी मां का जन्म होता है। जन्म के दो-तीन बाद ही आसमान में छाए काले-काले बादलों के स्वरूप में परिवर्तन प्रारंभ हो जाता है। भयानक बादल अब छंटने लगते हैं। लगभग सप्ताह भर बाद उमड़ते-घुमड़ते बादल अपने आप शांत होने लगते हैं। कुछ समय बाद आसमान बिल्कुल शांत हो जाता है । भयानक प्राकृतिक आपदा की आशंका और रानी मां के जन्म के मध्य लोगों ने एक विशेष प्रकार का संबंध स्थापित होते हुए देखा। अब लंकाओं वासी रानी मां को ईश्वर का अवतार समझने लगे।

रानी मां के पिता लोथोनांग पामई समाज के मुखिया थे। पूरा पामई समाज लोथोनांग का बहुत आदर एवं सम्मान किया करता था। सभी अपना सुख-दुख अपने मुखिया से बांटा करते थे। मुखिया की बेटी के जन्म के बाद बादलों के छंटने की घटना पूरे लंकाओं में चर्चा का विषय बन गई। लोग दूर-दूर से रानी मां को देखने आने लगे। रानी मां जन्म से ही देवी का अवतार बन चकी थी। पूरे पामई वासी रानी मां को गाइदिनल्यू कहने लगे। गाइदिनल्यू का हिंदी भाषा में अर्थ होता है सुख शांति की देवी।

एक दिन रानी मां की माता ने देखा कि छोटी बच्ची गाइदिनल्यू घर की छत पर बैठी आसमान को अपलक देख रही है। मां के पूछने पर कि आसमान को ऐसे क्यों देख रही हो? बेटी का उत्तर था मां ईश्वर का संदेश पढ़ रही हूं। अब उनकी समझ में आ गया कि यह कोई सामान्य बच्ची नहीं है। कुछ बड़ी होने पर रानी मां सामने पहाड़ियों पर घंटों बैठ ध्यान किया करती थीं। समय बीतता गया गाइदिनल्यू पहले से ज्यादा लोगों से मिलने

लगी। अब अधिक लोगों की समस्याओं का निस्तारण करने लगी। एक दिन गाइदिनल्यू को कांबिरान निवासी जादोनांग के बारे में जानकारी मिली कि वे सनातन धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के लिए अपने समाज के लोगों को जागृत कर रहे हैं। लोगों में हिन्दू धर्म के लिए आस्था की भावना का विकास कर रहे हैं। गाइदिनल्यू ने इस महान व्यक्ति से मिलने की इच्छा व्यक्त की। एक दिन गाइदिनल्यू अपने सहयोगियों के साथ कांबीरान जा पहुंची। जादोनांग का यहां पर गाइदिनल्यू से मिलना हुआ। दोनों महान विचारवान व्यक्तियों का मिलना ऐसे हुआ कि दोनों ने एक साथ कार्य करने का निश्चय कर लिया। दोनों ने सनातन संस्कृति एवं धर्म के प्रति लोगों को घर-घर जाकर जागृत करना प्रारंभ कर दिया। अंग्रेजों के द्वारा चलाए जाने वाले ईसाइयत कार्यक्रम का अब पहाड़ों पर विरोध शुरू हो गया। ईसाई मत में परिवर्तन का कार्यक्रम फेल होता नजर आने लगा। अंग्रेजों ने इन दोनों राष्ट्र-प्रेमियों को कैद करने की सोची। परिणामस्वरूप सरकारी पुलिस के द्वारा इन्हें अब दिन-रात ढूंढा जाने लगा। गाइदिनल्यू और जादोनांग को पहाड़ों पर बहुत समर्थन मिला, लगभग पूरा नागाओं और कंबीरण ने अपने नेता को बचाने के लिए जी जान लगा दिया था। इस प्रकार यह प्रयास ऐसा हो गया कि सामान्य जन इन्हें महान हलचल के नाम से पुकारने लगे। एक दिन अंग्रेजी हुकूमत द्वारा जादोनांग को गिरफ्तार कर लिया गया।

अब गाइदिनल्यू ने अकेले ही जादोनांग के अधूरे कार्य को पूरा करने का बीड़ा अपने सिर पर उठा लिया। अब गाइदिनल्यू ने पहले से ज्यादा समय लोगों के बीच रहना प्रारंभ कर दिया। वहां का सामान्य जन भी गाइदिनल्यू को अपने बीच पाकर बहुत खुश होता। अब बहुत बड़ी संख्या में लोग रानी गाइदिनल्यू से जुड़ने लगे। पूरा नागा हिल्स सनातन धर्म एवं संस्कृति से युक्त हो उठा। अब ईसाई मिशनरियां बहुत परेशान हो उठीं। उनका सारा प्रलोभन धरा रह गया।

अब ईसाई मिशनरियों ने वहीं के एक व्यक्ति फूजो को प्रलोभन देकर महान हलचल के प्रयास को समाप्त करने का निर्णय ले लिया। साथ ही गाइदिनल्यू को गिरफ्तार करने का वारंट निकाल दिया। एक दिन गाइदिनल्यू को गिरफ्तार कर जेल में कैद कर दिया गया। कैदी जीवन के दौरान गाइदिनल्यू को अनेक प्रकार की अमानवीय यातनाएं देने का प्रयास किया गया। उन्हें लगभग एक समय ही भोजन दिया गया। कई बार तो सप्ताह भर उन्हें भूखे रखा गया। लगभग पूरे उत्तर-पूर्वी भारत की समस्त जेलों से उनका साक्षात हो उठा था। मणिपुर जेल में कैदी जीवन के दौरान गाइदिनल्यू के कमरे में सांप, बिच्छू एवं गोजर आदि जहरीले जीव-जंतुओं को प्रवेश करा दिया जाता था। जिससे ये जीव गाइदिनल्यू को काट लें और गाइदिनल्यू की मृत्यु हो जाए, परंतु ये सभी जीव जैसे गाइदिनल्यू को पहचानते हों। किसी जीव ने कभी भी गाइदिनल्यू को किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंचाया।

वास्तव में गाइदिनल्यू को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त था। उन्हें परमात्मा की गहरी अनुभूति थी। इसका प्रमाण उनके कैदी जीवन के दौरान साथी कैदियों एवं वहां के जेलर आदि के द्वारा समय-समय दिया जाता रहा है। जेल के अधिकारियों ने गाइदिनल्यू को कई बार ध्यान की अवस्था में छत से स्पर्श करते हुए देखा है। जेल के अन्य कैदी गण भी गाइदिनल्यू के चमत्कारों के कारण उन पर अटूट विश्वास रखते थे। कई बार इसी कारण गाइदिनल्यू को वर्षों तक काल-कोठरी की सजा भुगतनी पड़ी थी। वास्तव में गाइदिनल्यू की कांति बहुत प्रभावशाली थी। जादोनांग के बाद वही एक मात्र ऐसा प्रभावशाली व्यक्तित्व था जिन पर पूरा नागा समाज भरोसा करता था। सभी गाइदिनल्यू को ईश्वर का अंश मानते थे। इसीलिए सब लोग उन्हीं के बताए रास्ते पर चलना उचित सतझते थे।

गाइदिनल्यू के द्वारा किए गए अनेक सामाजिक प्रयासों को संपूर्ण नागाओं ने एक चमत्कार समझा और तत्कालीन समय में स्वतंत्रता के लिए प्रयास करने वाले नेताओं ने रानी गाइदिनल्यू से मुलाकात की। एक बार जवाहर लाल नेहरू गाइदिनल्यू से मिलने मणिपुर आये।

वे गाइदिनल्यू से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने गाइदिनल्यू को पूर्वी भारत की रानी कह कर संबोधित किया। उसी समय से सामान्य बोलचाल में गाइदिनल्यू को रानी के उपनाम से पुकारा जाने लगा। वास्तव में रानी गाइदिनल्यू उत्तर-पूर्वी भारत में भारतीय संस्कृति की रक्षा के निमित्त नागरिकों को निरन्तर प्रेरित करती रहीं। इसी प्रेरणा के कारण वहां का सामान्य से सामान्य मानव भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता पर गर्व करने लगा। यह सब अंग्रेजों को नागवार गुजरा और उन्होंने पूर्वी भारत के ही एक सदस्य फुजो को रानी गाइदिनल्यू के द्वारा संचालित कार्यक्रम के विरोध स्वरूप ताकत के साथ तैयार किया। अब अंग्रेज परस्त फुजो नागा लोगों को धन के माध्यम से ईसाई मत में परिवर्तित करने का बहुत बड़ा कार्यक्रम चलाने लगा। लेकिन रानी गाइदिनल्यू लोगों को अपने ध र्म और संस्कृति के प्रति जागृत करती रहीं। बहुत बड़ी संख्या में आज भी लोग हिन्दू धर्म और संस्कृति को मानते हैं। रानी गाइदिनल्यू ने इस्लाम एवं ईसाई मत को धर्म कहने वाले लोगों को बताया कि इस धरती पर एक मात्र धर्म है वह है मानव का धर्म जिसका नेतृत्व केवल सनातन संस्कृति ही करती है। अतः हमारी भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण विश्व की आद्य संस्कृति है। उनका सन्देश व प्रयास सदियों तक याद किया जाता रहेगा।

दुर्भाग्य का विषय यह है कि आजादी के बाद कई वर्षों तक गाइदिनल्यू को जेल में ही रहना पड़ा। विरोधी ताकतों के द्वारा महान स्वतंत्रता सेनानी को भारत विरोधी करार दिया गया था। एक बार रानी गाइदिनल्यू संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्रद्धेय माधव सदाशिव राव गोलवलकर जी (श्रीगुरुजी) से मिलीं। गाइदिनल्यू ने गुरुजी को अपनी बात ठीक प्रकार से समझाया। श्रद्धेय गुरुजी ने रानी मां को भारत की वास्तविक बेटी माना।

वास्तव में रानी गाइदिनल्यू ने पूर्वोत्तर भारत में भारतीयता को बढ़ाने और जीवित रखने में प्रमुख भूमिका निभाई। आज ऐसी विभूतियों को याद कर उनके पथ पर चलने की आवश्यकता है। ❐

BANSAL INDUSTRIES

BANSAL®

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651891-92-93, Fax : +91-11-23651890
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

नितिन की नहीं कोई तुलना

– अमित कुमार गुप्ता

समाज में ऐसे लोगों की कोई कमी नहीं, जो दिन–रात बिना किसी अपेक्षा के देश की सेवा कर रहे हैं। ऐसे ही एक सज्जन हैं मुम्बई के कुर्ला इलाके में रहने वाले चित्रकार नितिन महादेव यादव। नितिन के बनाए स्केच के सहारे मुम्बई पुलिस अब तक 450 से अधिक अपराधियों को पकड़ चुकी है। इसलिए इनको 'आधा पुलिसवाला' भी कहा जाता है। नितिन बीते 30 वर्ष में पुलिस के लिए 4,000 से अधिक स्केच बना चुके हैं। नितिन मात्र 5वीं कक्षा के छात्र थे तब उन्होंने कागज को बीस रुपए के नोट के आकार में काटा और अपने पेंट ब्रश की मदद से हूबहू असली नोट जैसा पेंट कर दिया। उस नोट को लेकर नितिन एक होटल में गए और काउंटर पर वह नोट पकड़ा दिया। नोट इतना हूबहू पेंट हुआ था कि सामने ड़े व्यक्ति ने उसे असली नोट समझ कर रख लिया। इसके बाद नितिन ने बताया कि वह नोट नकली है, तो वहाँ मौजूद सभी लोग उनकी प्रतिभा से चकित रह गए।

एक दिन नितिन मुम्बई के ही एक पुलिस स्टेशन में नेमप्लेट पेंट कर रहे थे। उसी समय थाने में एक हत्या का मामला आया। हत्या का गवाह होटल में काम करने वाला एक 'वेटर' था। पुलिस उससे हत्या करने वाले व्यक्ति का हुलिया पूछ रही थी और 'वेटर' समझा नहीं पा रहा था। नितिन थानेदार के पास गए और उनसे कहा कि अगर वे 'वेटर' को केवल आधा घंटा उसके साथ बैठने दें तो वह हत्यारे का हूबहू स्केच तैयार कर सकता है। पहले थानेदार ने नितिन की बात को मजाक में लिया पर नितिन के बार–बार आग्रह करने पर थानेदार मान गया। उसके बाद जो हुआ वह चमत्कार था। 'वेटर' से हत्यारे का हुलिया पूछने के बाद नितिन ने थानेदार के हाथ में एक स्केच पकड़ाया। वह चेहरा हूबहू हत्या करने वाले व्यक्ति से मिलता था। उस स्केच की मदद से 48 घंटे के अंदर वह आरोपी पकड़ा गया। सारा पुलिस महकमा अब नितिन का मुरीद बन चुका था। कुछ समय के पश्चात् एक लड़की से बलात्कार हुआ जो मूक बधिर थी। न बोल सकती थी, न सुन सकती थी। नितिन को तत्कालीन डीएसपी ने याद किया और बच्ची से मिलवाया।

नितिन बलात्कारी का चेहरा बच्ची की आँखों में दे चुके थे। नितिन ने एक–एक करके कई स्केच बनाए। कई तरह की आँखें, कई तरह का चेहरा। कई तरह के नैन–नक्श। एक एक कर इशारे के जरिए बच्ची बताती गई कि बलात्कारी कैसा दिखता है। 8 घंटे की अथक मेहनत के बाद नितिन मनोहर यादव ने डीएसपी के हाथ में बलात्कारी का स्केच थमा दिया। स्केच की मदद से अगले 72 घंटे में बलात्कारी को पकड़ा गया। नितिन अब मुम्बई पुलिस के लिए संजीवनी बूटी बन चुके थे। हर एक मामले में नितिन के स्केच ऐसी जान फूंक देते के पुलिस उसे आसानी से सुलझा लेती। सबसे विशेष बात यह है कि 30 साल में किसी भी स्केच या तस्वीर के लिए नितिन ने पुलिस या किसी भी अन्य व्यक्ति से एक नया पैसा भी नहीं लिया है। बार–बार पुलिस महकमे के बड़े से बड़े अधिकारियों ने नितिन को ईनामस्वरूप धनराशि देने का प्रयास किया पर नितिन ने एक रुपया भी लेने से इनकार कर दिया। नितिन चेम्बूर एजूकेशन सोसाइटी के एक स्कूल में शिक्षक रहे हैं। जो तनख्वाह आती उसी से गुजर–बसर करते रहे। नितिन का कहना है कि स्केच बना कर वे एक तरह से राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं। असामाजिक तत्वों की पहचान होती है तो वे सलाखों के पीछे जाते हैं। नितिन 30 साल तक अपना काम राष्ट्र सेवा के भाव से करते रहे और आज भी एक बुलावे पर सब कामकाज छोड़ कर हाजिर हो जाते हैं। 30 साल की इस सेवा में नितिन को करीबन 164 प्रतिष्ठित संस्थाओं ने सम्मानित किया है। नितिन बड़े गर्व से सम्मानपत्र और ट्रॉफी दिखाते हुए कहते हैं, ''यही मेरी कमाई है, यही मेरी जमापूँजी है।''

सच में नितिन जैसे लोग बहुत कम हैं। उनकी नि:स्वार्थ सेवा से हम सब बहुत कुछ सीख सकते हैं।

(साभार : फेसबुक)

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/83
तिथि 6-7 जनवरी, 2021
मुद्रण तिथि-4 जनवरी, 2021

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2019-2021
DL(ND)-11/6188/2019-20-21
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

गणतंत्र दिवस की परेड में संघ के स्वयंसेवक

1963 की परेड में शामिल संघ के स्वयंसेवक

यह संघ विचार परिवार के लिए बहुत ही गर्व की बात है कि 1963 के गणतंत्र दिवस की परेड में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 3,000 स्वयंसेवकों ने गणवेष में भाग लिया था। ऐसा तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के आमंत्रण पर हुआ था। उल्लेखनीय है कि 1962 में चीन के साथ हुए युद्ध के दौरान संघ के स्वयंसेवकों ने सेना का बढ़-चढ़कर सहयोग किया था। कई स्थानों पर यातायात व्यवस्था को संभाला था। इससे नेहरू बहुत प्रभावित हुए थे और उन्होंने संघ से अपने स्वयंसेवकों को परेड में भेजने के लिए निवेदन किया था। (जबकि नेहरू संघ के घोर विरोधी थे। संघ को कुचलने के लिए उन्होंने अनेक कोशिशें कीं, लेकिन वे इसमें सफल नहीं हुए) कुछ अन्य संगठनों के कार्यकर्ताओं को भी इस परेड के लिए आमंत्रित किया गया था, लेकिन उन संगठनों ने नेहरू की नीतियों का विरोध करने के लिए अपने कार्यकर्ताओं को परेड में नहीं भेजा था। लेकिन संघ ने नेहरू से वैचारिक मतभेद होने के बावजूद उनके आमंत्रण को स्वीकार कर अपने स्वयंसेवकों को परेड में भेजा था। संघ ने यह संदेश दिया था कि देश के दुश्मनों को परास्त करने के लिए वह सदैव सरकार के साथ है।

1963 की एक मजेदार बात यह भी है कि परेड के लिए 'कांग्रेस सेवादल' के कार्यकर्ताओं को भी बुलाया गया था, लेकिन उसके कार्यकर्ता नहीं पहुँच पाए। परेड के बाद कुछ नेताओं ने नेहरू से शिकायत की कि ''आपने परेड के लिए संघ के स्वयंसेवकों को बुलाकर शायद ठीक नहीं किया। संघ तो हमारा विरोधी है।'' इसका जो उत्तर नेहरू ने दिया, वह और भी मजेदार है। श्री माधव गोविंद वैद्य, जिनका 19 दिसंबर, 2020 को निधन हो गया है, ने पांचजन्य में लिखे एक लेख में लिखा है कि नेहरू ने उन नेताओं से ही पूछ लिया कि कांग्रेस सेवादल के कार्यकर्ताओं को भी बुलाया गया था, लेकिन वे क्यों नहीं आए! इस पर उन नेताओं ने कहा, ''बहुत कम समय पर आने की सूचना दी गई थी, इसलिए कार्यकर्ताओं के लिए गणवेष तैयार नहीं हो पाया। इस कारण कार्यकर्ता परेड में शामिल नहीं हो पाए।'' इस पर नेहरू ने कहा, ''संघ के स्वयंसेवकों के पास गणवेष कहाँ से आ गए!'' तो उन नेताओं ने ही उन्हें बताया, ''संघ के स्वयंसेवकों के पास ही गणवेष रहता है। इसलिए जब भी उन्हें कहीं जाने के लिए कहा जाता है तो वे तुरंत तैयार होकर वहाँ पहुँच जाते हैं।'' लोगों को यह भी पता होना चाहिए कि संघ के स्वयंसेवक गणवेष अपने पैसे से खरीदकर पहनते हैं, जबकि कांग्रेस सेवादल के कार्यकर्ताओं को गणवेष संगठन की तरफ से दिया जाता है।

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि इस वर्ष भारत के लोग 26 जनवरी को 70वाँ गणतंत्र दिवस मना रहे हैं। उल्लेखनीय है कि 26 जनवरी, 1950 को 'भारत सरकार अधिनियम (एक्ट)' 1935 को हटाकर संविधान लागू किया गया था। इसीलिए 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन नई दिल्ली के राजपथ पर भव्य परेड निकाली जाती है। इसमें भारत की प्रगति, भारत की संस्कृति, भारत की शक्ति, भारत की कूटनीति आदि को झाँकियों के माध्यम से दिखाया जाता है। इस परेड में सैनिकों की परेड देखकर तो हर भारतीय का सर गर्व से ऊँचा हो जाता है।

मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: इन्दिरा मोहन द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।